









# UGC- Malaviya Mission Teacher Training Centre (MMTTC) National Institute of Educational Planning and Administration (NIEPA), New Delhi &

# Mohanlal Sukhadia University, Udaipur

Invite you to join

# Two-Week Online Refresher Programme on 'Research Methods: Approaches & Practices'

## $7^{th}$ March to $21^{st}$ March, 2024

Objectives	<ul> <li>To develop interdisciplinary approach and analytical thinking for research</li> <li>To explain important aspects of Research Methodology</li> <li>To impart intense knowledge about different types of research designs and sampling methods</li> <li>To enhance understanding of data types and basic as well as advanced tools and techniques of classification and analysis</li> <li>To enable the participants to apply tools and techniques for their research and reporting of research outcome with the help of appropriate software.</li> <li>To provide them with hands-on experience on different software of data analysis.</li> <li>To improve writing of research paper &amp; understand the publishing process.</li> </ul>
Expected Outcomes	After successful completion of this online program, the participants will be able to conduct quality research and produce fruitful outcomes. They will conduct research in a scientific manner by using appropriate quantitative and qualitative methods and effectively analyse the data. They will be competent to report their research outcomes impressively and generate quality publications.
Incentive for Faculty Members	This Refresher Course conducted under the Malaviya Mission Teacher Training Programme shall be taken into consideration for the fulfilment of the requirements as laid down in the Career Advancement Scheme as per UGC Regulations on Minimum qualifications for appointment of teachers and other Academic Staff in Universities and Colleges and Measures for the Maintenance of Standards in Higher Education 2018.
Programme Duration and Contact Hours	It is a two-week programme to be held from $7^{th}$ March to $21^{st}$ March, $2024$ with $72$ contact hours (6 hours daily on 6 working days of each of the two weeks).
Fees	No fees will be charged from participants.
Registration	Participants can register for the programme by filling the <b>Google form</b> <a href="https://forms.gle/bXuoAoT2ynczdniy5">https://forms.gle/bXuoAoT2ynczdniy5</a> latest by 6 <sup>th</sup> March, 2024.
Eligibility Criteria	The programme is open to faculty members (regular/permanent/ad-hoc/contractual/guest) from all disciplines at all levels.
Expectation from the participants	<ul> <li>The participants are required to attend all the sessions of the programme sincerely. No leave will be granted during the programme.</li> <li>The participants will be requested to submit their opinions and suggestions (feedback) on the various components of the program.</li> </ul>

#### **Patron**



Prof. Shashikala Wanjari

Hon'ble Vice-Chancellor

NIEPA, New Delhi



Prof. Mona Khare
Director, UGC – Malaviya Mission
Teacher Training Centre, NIEPA, New Delhi
Email: niepammcdir@niepa.ac.in



Prof. Sunita Mishra Hon'ble Vice-Chancellor MLSU, Udaipur

### **Contacts**

#### Deputy Director, UGC - MMTTC



Dr. Amit Gautam
Associate Professor
Phone: 91- 011-26544889
Email: ddmmttcniepa@niepa.ac.in

#### Refresher Programme Coordinator



Dr. Neha Paliwal

Dept. of Economics, MLSU, Udaipur

Mb.N.-9829858589

Email: neha.paliwal03@gmail.com

Technical



Sh. Chandra Kumar M.J.
Systems Analyst
Phone: 91- 011-26544879
Email: chandrakumar@niepa.ac.in

"Microbial Techniques" workshop report

Department of Microbiology and Biotechnology have organized a workshop on "Microbial

Techniques" on 18 October, 2023 for the B. Pharma students of Asian College of Pharmacy,

Udaipur under the aegis of Azadi ka Amrit Mahtosav.

The objective of this workshop was to combine the theoretical knowledge of students along with

the practical exposure. In this workshop twenty students have participated and hands on training

includes experiments related to basic microbial techniques like gram staining, carbohydrate

fermentation, isolation of microbes and antibiotic susceptibility test.

Students have visited research laboratories of the department and seen the instrumentation

facility also.

Dr. Namita Ashish Singh

Coordinator

Dr. Harshada Joshi

**Course-Director** 

Paragraph Styles

# 3- Two Weeks Training Programme-III

On

#### "Research Methodology Using SPSS Software"

Research Skill Development in Social Sciences, Communication & Management'
Organized by Dept. of Sociology under RUSA 2.0 project
(8.01.2024 to 22.01.2024)

# 4- Two Weeks Training Programme-IV

On

## "Research Methodology and Writing Skills"

'Research Skill Development in Social Sciences, Communication & Management'
Organized by Dept. of Sociology under RUSA 2.0 project
(5.02.2024 to 19.02.2024)

# 5- Two Weeks Training Programme-V

On

## "Skill Development in Social Sciences"

'Research Skill Development in Social Sciences, Communication & Management'
Organized by Dept. of Sociology under RUSA 2.0 project
(18.11.2024 to 01.12.2024)

#### जनजातीय अध्ययन : शोध प्रविधि एवं तकनीकी

## राष्ट्रीय कार्यशाला

दिनांक: 9-10 मार्च, 2024

आयोजक:

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर
माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
ट्राईबल रिसर्च एंड नॉलेज सेंटर, नई दिल्ली
वनवासी कल्याण आश्रम, उदयपुर

#### प्रतिवेदन

जनजातीय अध्ययन : शोध प्रविधि एवं तकनीक विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 9-10 मार्च, 2014 को मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर, माणिक्यलाल वर्मा आदिम जाति शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान उदयपुर, ट्राईबल रिसर्च एंड नॉलेज सेंटर नई दिल्ली तथा वनवासी कल्याण आश्रम, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के बप्पा रावल सभागार में हुआ। इसका उद्घाटन 9 मार्च को सुबह 10:00 बजे अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। इस सत्र में अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री अतुल जोग, जनजातीय क्षेत्रीय विकास मंत्री श्री बाबूलाल खराड़ी, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय की कुलपित प्रोफेसर सुनीता मिश्रा, ट्राईबल रिसर्च एवं नॉलेज सेंटर नई दिल्ली के महासचिव प्रो. विवेक दुबे और कार्यक्रम संयोजक डॉ. मन्ना लाल रावत का मार्गदर्शन मिला।

कारक्राम का आरंभ दीप प्रज्वलन और सरस्वती वंदना से हुआ। विश्वविद्यालय के कुलगीत के साथ अतिथियों का स्वागत एवं उद्घाटन भाषण, कार्यशाला का परिचय के साथ कार्यशाला में पधारने के लिए सभी अतिथियों को धन्यवाद दिया गया।

इस उद्घाटन सत्र में अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के राष्ट्रीय संगठन मंत्री अतुल जोग ने कहा कि प्राचीन काल के शासकों तथा कालांतर में ब्रिटिश शासन ने अपने स्वार्थ के लिए जनजातियों को गरीब बनाया। बदनाम करने के लिए क्रिमिनल घोषित किया और पिछड़ा साबित किया। उन्होंने कहा कि आदिवासियों के बारे में अब तक जो इतिहास में पढ़ाया गया, वह गलत था। हमें आदिवासियों की अस्मिता को समझना और सही तरीके से प्रस्तुत करने की आवश्यकता है।

जनजातीय क्षेत्रीय विकास मंत्री श्री बाबूलाल खराड़ी जी ने कहा कि आजादी के बाद न तो जनजातियों का समुचित विकास हुआ और न ही उन पर महत्वपूर्ण शोध हुए। आज की जरूरत है कि आदिवासी समाज को जागृत किया जाए और उनके इतिहास को सही परिपेक्ष्य में लिखा और पढ़ा जाए। श्री खराड़ी ने कहा कि जनजाति समाज स्वाभिमानी समाज है। उन्हें अपने पैरों पर खड़ा कर स्वावलंबी बनाना होगा।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय की कुलपित प्रो. सुनीता मिश्रा ने कहा कि मैंने आदिवासी समाज को बहुत करीब से देखा है। ट्राईबल रिसर्च एवं नॉलेज सेंटर नई दिल्ली के महासचिव प्रोफेसर विवेक दुबे ने कहा कि हमारा संस्थान पूरे देश में जनजाति चिंतन से जुड़े विषयों पर लगातार कार्यशालाएं कर रहा है तािक जनजातियों के विकास के लिए चिंतन प्रवाह को आगे बढ़ाया जा सके। कार्यक्रम संयोजक डॉ. मन्ना लाल रावत ने कहा कि आदिवासी अध्ययन नहीं अनुभूति का विषय है क्योंकि आदिवासी समाज सदैव स्वाभिमानी समाज रहा है और इसके उत्थान और विकास के लिए जितने प्रयास होने चाहिए उतने नहीं हुए। कार्यक्रम का संचालन डॉ बालूदान बारहट ने किया और धन्यवाद डॉ. नवीन नंदवाना ने दिया।

#### प्रथम सत्र

चाय के लिए ब्रेक कार्यशाला का प्रथम सत्र 11: 45 पर प्रारंभ हुआ। उद्घाटन के बाद प्रथम तकनीकी सत्र में प्रो. फीरमी बोडो ने कहा कि जनजाति समाज को उन्हीं की नजर से देखने की आवश्यकता है। उन्होंने अपने वक्तव्य में मिजो और मणिपुरी भाषाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हमें जनजाति समाज की Thought और understanding को समझना होगा। हमारी जनजातियां इतने वर्षों से यूं ही नहीं संघर्ष कर रही हैं। हमें जनजाति समाज को उनकी आंखों से देखने की आवश्यकता है।

#### द्वितीय सत्र

भोजनोपरांत दूसरा सत्र 2:00 बजे प्रारंभ हुआ जिसमें मुख्य वक्ता श्री राजाराम कटारा, श्री गिरीश कुबेर जी एवं प्रोफेसर एम.एस. राठौड़ थे। इस सत्र का विषय 'जनजातीय अस्तित्व' था। इस सत्र में मुख्य वक्ता श्री राजाराम कटारा ने कहा कि जनजातीय अस्मिता और अस्तित्व पर शोध व विमर्श होना सुखद है। जनजातियों की अस्मिता ठीक से जानने पर ही हम उनके कल्या (विकास) की ठीक से योजना बना पाएंगे। मात्र भौतिक उन्नित से ही जनजाति कल्याण को जोड़ लिया जाता है, यह उचित नहीं है। इस दृष्टि के कारण कई विषय छूट जाते हैं। अब तक इस समाज के परंपरागत ज्ञान को ठीक से नहीं समझा गया। इस कारण यह स्वावलंबी समाज बेरोजगार हो गया। स्वास्थ्य, बीज संरक्षण, रस्सी निर्माण, प्राकृतिक चिकित्सा आदि का जो ज्ञान इस समाज के पास है, इनके इस ज्ञान पर ध्यान देना अपेक्षित है। हमें आदिवासी समाज की आध्यात्मिकता को समझना होगा। जनजाति समाज का धर्म व आध्यात्म देने की परंपरा से जुड़ा है। अपने भजन और आरती में यह 'स्वयं के कल्याण के स्थान पर लोक कल्याण' की कामना ट्यक्त करता है।

इस सत्र में श्री गिरीश जी कुबेर जी कहा कि जनजाति अस्मिता की बात केवल जल, जंगल, जमीन की लड़ाई तक नहीं है। उन्होंने 1871 क्रीमिनल एक्ट की बात भी की। उन्होंने प्रोटेक्शन ऑफ़ लेंड, कल्चर और लेंग्वेज पर भी अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि जनजातियों की सक्सेस स्टोरी लिखी जानी चाहिए। उन्होंने जमीन और पुनर्वास के विषयों पर विचार व्यक्त किए। नियमों और योजनाओं की जानकारी के अभाव के कारण सरकारी योजनाओं का लाभ वहां तक नहीं पहुंच पाता है।

वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रो. मदन सिंह राठौड़ ने कहा कि जनजातियों के लिए किया गया विकास विकारग्रस्त न हो। आपने वसुधैव कुटुंबकम की महता बताई। साथ ही नीति निर्माण और क्रियान्वयन के बीच का गैप खत्म करने पर बल दिया।

#### तृतीय सत्र

इस कार्यशाला का तीसरा सत्र 3:15 बजे प्रारंभ हुआ जिसके मुख्य वक्ता प्रोफेसर विवेक कुमार, श्री वैभव सुरंगे और श्री एस.एल. परमार ने जनजातीय विकास पर अपनी बात रखी।

श्री वैभव सुरंगे ने कहा कि विकास के साथ जनजातीय जीवन को ध्यान में रखने की महती आवश्यकता है। हम जंगल काटकर विकास की बात करते हैं, फिर पेड़ लगाने की चिंता करते हैं। हैप्पीनेस इंडेक्स को ध्यान में रखते हुए विकास के पथ पर अग्रसर होना होगा। पर्यावरण के अनुकूल विकास का मॉडल बनाना होगा। हमारे पास कम्युनिटी का मॉडल बचा नहीं है, जनजातियों के पास अभी बचा है। हम जनजाति समाज की स्थिति को जाने बिना

मत तय कर लेते हैं, जो उचित नहीं है। शोधार्थी को अपने शोध के माध्यम से सरकारी योजनाओं का सही मूल्यांकन कर उसके निष्कर्ष सरकार तक पहुंचाने होंगे। विकास योजनाओं की असफलता का भी ठीक से मूल्यांकन करना होगा। श्री एस.एल. परमार ने कहा कि आजादी के बाद विकास दिखता है, पर सवाल गुणवता का है। हमारे यहां शिक्षा के क्षेत्र में संख्या तो बढ़ी है, पर स्तर नहीं बढ़ा। प्रो. विवेक कुमार ने 'जनजातीय समाज की प्राचीन परंपरा और विकास' विषय पर अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि हम जनजातीय समाज के विकास के लिए चिंतित हैं बल्कि हमें विकास के सही मॉडल को समझना होगा।

प्रो. नीरज शर्मा ने सनातन दर्शन, शांति और समन्वय की विराट प्रकृति पर विचार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि विवेक पूर्ण मानवीय आचरण जरूरी है। वैदिक दर्शन में प्रकृति की उपासना महत्वपूर्ण है। आपने नारायण दशावतार की बात करते हुए प्रकृति से विकास क्रम को दर्शाया। प्राकृतिक शक्तियों के मानवीकरण और पंच देवोपासना की चर्चा की और कहा कि सनातन का मूल एक है। सनातन वैदिक अस्मिता, आदिवासी आस्तिकता के बिना अपूर्ण है। सनातन वैदिक चिंतन प्रवाह आदिवासी मूल्यों से अभिन्न है। हमारी सनातन संस्कृति वन्य जीवन से अभिन्न है।

प्रो. सुरेश अग्रवाल ने वैदिक धर्म और भिक्त -पर अपने विचार रखे। संत मावजी के चौपड़े, वाणियों में निहित भविष्यवाणियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने वैदिक संस्कृति व जनजातीय संस्कृति, गोविंद गुरु के प्रवचन और अवदान को रेखांकित किया। उन्होंने विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम और जनजातीय विद्यार्थियों के ड्रॉपआउट के कारणों पर प्रकाश डाला। वहीं प्रो. दिग्विजय भटनागर ने समन्वय के दर्शन, शिक्षा को बढ़ाने पर बल दिया।

#### दूसरा दिन : 10 मार्च 2024

#### प्रथम सत्र

कार्यशाला के दूसरे दिन 10 मार्च, 2024 को सुबह 10:00 बजे प्रथम सत्र प्रारंभ हुआ जिसमें मुख्य वक्ता श्री भगवान सहाय जी, प्रो. बिनोद कुमार और डॉ. प्रियासी दत्ता थे।

प्रो. बिनोद कुमार ने कहा कि हम अपनी कहानी स्वयं नहीं लिख पाए तो कोई और उसे अपने तरीके से लिख गया। इस सत्र में डॉ. बिनोद कुमार ने Curriculum Design पर बात की। वहीं आदिवासी जीवन के विषय में Reclaiming Narrations & Documentations पर अपने विचार रखे। इस सत्र में श्री भगवान सहाय जी ने जनजातीय

संस्कृति और सनातन संस्कृति को अभिन्न बताया और कहा कि जनजातीय संस्कृति रक्षण, पोषण और संवर्धन होना चाहिए। हमें जनजातियों के बीच सकारात्मकता लेकर जाना होगा।

#### दवितीय सत्र

इस दिन का दूसरा सत्र 11:30 बजे प्रारंभ हुआ जिसमें 'शोध प्रविधियां' विषय पर प्रकाश डाला गया। इस सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. अनिल कोठारी ने कहा कि जनजातीय विषयों पर अनुसंधान और शोध करने से पहले उनसे जुड़ाव जरूरी है। पश्चिमी देशों के प्रबंधन के तरीके हमारे देश में हूबहू लागू नहीं किए जा सकते हैं। भारतीय जनजातियों में कई विषयों पर शोध की संभावना है। इसके बाद भोजन अवकाश हुआ।

#### समापन समारोह

इस कार्यशाला का समापन सत्र अपराहन 2.00 बजे प्रारंभ हुआ जिसके अध्यक्ष प्रो. बी.पी, शर्मा, मुख्य अतिथि श्री हर्ष चौहान और श्री सुधीर दवे थे। श्री सुधीर दवे ने जनजातीय विकास विभाग की गतिविधियों और योजनाओं की जानकारी दी। श्री वारसिंह निर्देशक टी.आर.आई. ने टी.आर.आई. की गतिविधियों, उद्देश्यों एवं महत्वपूर्ण योजनाओं के बारे में बताया।

श्री हर्ष चौहान ने कहा कि जनजातीय समाज को लेकर अलग-अलग नेरेटिव हैं, उस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उन्होंने Why Tribal Research ? विषय पर अपने विचार रखे और कहा कि जनजातीय समाज को हम ठीक से समझ नहीं पाए। अंग्रेजों की दृष्टि से हम इस समाज को देखते हैं, जो ठीक नहीं है। हमारी संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में इस पर अध्ययन करेंगे तो हम इस समाज को समझ पाएंगे। उन्होंने कहा कि नगरीय जीवन में आज आदिवासी को लेकर जो छवि बनी हुई है वह सोचनीय है। औपनिवेशिक मानसिकता से लिखा गया साहित्य और बनी हुई फिल्में आज भी आदिवासियों की छवि बदल नहीं सकीं। आज आंकड़े और यथार्थ में भेद दिखता है। अतः इस समाज को आधार बनाकर शोध एवं अध्ययन की महती आवश्यकता है। दृष्टि, पद्धति और संकल्प ठीक होने पर ही जनजातीय समाज पर सही शोध संभव है।

प्रो. बी.पी. शर्मा ने कहा कि सबसे सभ्य और सुसंस्कृत समाज जनजातीय समाज है। 'गवरी' नृत्य के माध्यम से हम उनकी श्रद्धा और अनुशासन देख सकते हैं। आस्था और समर्पण हम उनके इस वार्षिक पर्व में देख सकते हैं। गवरी के एक-एक पात्र पर शोध की

अनेक संभावनाएँ हैं। जनजातीय समाज का हमने ठीक से अध्ययन अभी तक नहीं किया है। जनजातियों के पर्वों व मान्यताओं पर भी शोध की आवश्यकता है। इस समापन समारोह का संचालन डॉ. विनीता राजपुरोहित ने किया और आभार डॉ. बालूदान बारहठ ने व्यक्त किया किया। राष्ट्रगान के साथ इस कार्यशाला का समापन हुआ।

000

# REPORT OF ONE DAY WORKSHOP ON "ACCOUNTING FOR HOTELS" [MAY 9, 2024 THURSDAY]

# **ORGANIZED BY**

Department of Accountancy and Business Statistics,

Mohanlal Sukhadia University, Udaipur (Raj.)



Department of Accountancy and Business Statistics
University College of Commerce & Management Studies

Mohanlal Sukhadia University
(NAAC ACCREDITED "A" Grade State University)
Organising

# WORKSHOP ON ACCOUNTING FOR HOTELS



#### Thursday, May 9, 2024 at 11:00 am

Venue : Computer Lab (Room No. 402)
University College of Commerce & Management Studies

Chief Patron
Prof. Sunita Mishra
Hon'ble Vice Chancellor
MLSU, Udaipur

Co-Patron
Prof. B.L. Verma
Dean and Faculty Chairman
UCCMS, MLSU, Udaipur

Workshop Director
Prof. Shurveer S. Bhanawat
Head
Department of ABST

Department of ABST MLSU, Udaipur Workshop Secretary

Dr. Shilpa Vardia

Assistant Professor

Department of ABST

MLSU, Udaipur

Registration Link: https://forms.gle/tysLUyZ5wrCe7euS8

One day workshop on "Accounting for Hotels" was organized by Department of Accountancy and Statistics, University College of Commerce and Management Studies, MohanlalSukhadia University. The workshop was organized under the guidance of Honorable Vice chancellor of the University Professor Sunita Mishra and Dean of University, Professor B.L Verma.

Organizing Secretary of the workshop **Dr. Shilpa Vardia** said that the main objective of conducting this workshop is to provide practical Knowledge of "**Accounting for hotels**" and also increase there employment opportunities in hotel industry. Further , she said that there are immense possibilities of tourism in Udaipur. Hotel industry is biggest industry in Udaipur in which an investment of 1000 crores and about 1000 employees are working. She also focused significance of hotel accounting in present era and different services provided by hotel industry.

Thereafter, Department Head **Dr. Shurveer Singh Bhanawat**, also motivated students on creating their own employment and form groups and develop accounting skills and plan to start a start up. He enlightened the knowledge of participants by providing in depth knowledge about the concept of Hotel accounting.

The keynote speaker of present workshop **Mr. Piyush Soni**, made the participants aware of the introduction of Hotel Business Accounting, its types, license requirement and tax system through Power point presentation. Along with this, he also gave training of practical hotel accounting through case study related to hotel through tally software.

The present workshop was very informative and interactive as it ended with quiz and question and answer round that enabled the participants to put their queries which were very well explained and answered by resource person. Lastly , **E- Certificate** were provided to all **51** participants who attended the present workshop.

The Faculty members of the department, Assistant Professor **Dr. ShilpaLodha, Dr. Asha Sharma, Dr. ParulDashora, Dr. PushprajMeena**were present in this workshop. Along with this, Guest faculty of Accountancy department **Dr. RimpiSaluja, Dr. Nidhibhanawat, Dr. Priyanka Jain** and **Dr. Ruchika Jain** were also present.















# स्टार्टअप सृजित कर रोजगार के अवसर पैदा करने होंगे

# सुविवि में लेखांकन पर कार्यशाला

ब्यूरो नवज्योति/ उदयपुर।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के लेखांकन एवं सांख्यिकी विभाग द्वारा गुरुवार को होटल लेखांकन पर कार्यशाला का आयोजन कंप्यूटर लेब में किया गया। कुलपित प्रो. सुनिता मिश्रा एवं विश्वविद्यालय वाणिज्य एवं प्रबन्ध संकाय के अधिष्ठाता प्रो. बीएल वर्मा एवं व विभागाध्यक्ष प्रो. शूरवीर सिंह भाणावत के मार्गदर्शन में इस कार्यशाला का आयोजन किया गया। आयोजन सचिव डा. शिल्पा वर्डिया ने बताया कि उदयपुर में लेखांकन में रोजगार की संभावना भरपूर है। अतः लेखा विद्यार्थियों के लिए यह कार्यशाला उनके रोजगार के अवसरों में अभिवृद्धि करेगी। विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. शूरवीर सिंह भाणावत ने कहा कि स्वयं के रोजगार के सृजन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इसके लिए लेखांकन एवम टैक्सेशन



में कौशल विकसित करके स्टार्ट अप शुरू करने की योजना बनानी चाहिए।संचालन शौयगढगढ़िरसॉर्ट के अकाउंट्स एग्जीक्यूटिव पीयूष सोनी ने किया। सुखाड़िया विश्वविद्यालय कुलपित प्रो. सुनिता मिश्रा एवं विश्वविद्यालय वाणिज्य एवं प्रबन्ध संकाय के अधिष्ठाता प्रो. बीएल वर्मा ने कार्यशाला के लिए शुभकामनाएं पेषित की।

#### DEPARTMENT OF ACCOUNTANCY AND BUSINESS STATISTICS UNIVERSITY COLLEGE OF COMMERCE AND MANAGEMENT STUDIES MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSITY, UDAIPUR

Workshop on Accounting For Hotels on 9 May, 2024 at 11 am CLASS Name Mobile No. MFC M.Voc Signature M.Com Other (ATA) Vikosh Kumar 7079840252 V.Ka2 2 Nayan Gorwani Jansan Kukrdiwala 8203363307 3427007162 V Komai Bhagwatilai Nagda 9137509702 Viet Rhoti 9953763198

Thirmay Jaim 979918578

De Nidhi Bhapawat Mishi 94149170 C1

Libertutt Sough Rus 978556 7574

Ruku Saha 8290115574 9799185787 -8 Khushi Mad 10 1300271346 11 Druga Kalal 4 8355 30 2866 12 Meenalshi Pariyui U 8824149482 13 8769991269 -14 Juya kumoni 9588296278 -15 mayor ved 16 8890851125 Nogratinasia Nagarden Such Bilkaha 17 V DIKSHA PLREHIT 7014527813 mulita phatnager 290 57410 89

# DEPARTMENT OF ACCOUNTANCY AN. SS STATISTICS UNIVERSITY COLLEGE OF COMMERCE AND MANAGEMENT STUDIES MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSITY, UDAIPUR

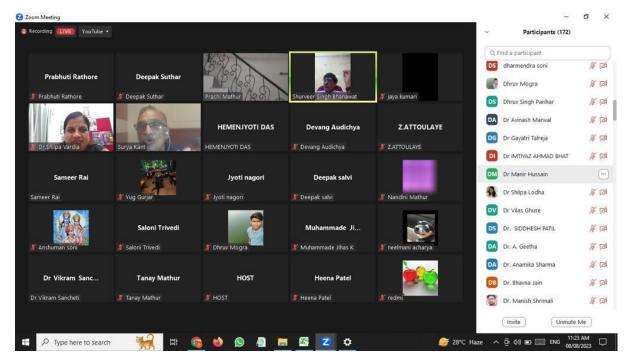
Workshop on Accounting For Hotels on 9 May, 2024 at 11 am CLASS Mobile No. Signature M.Voc Sr. no. Name MFC Other M.Com (ATA) Darlon 9649755098 49 Agush Maheshwari 8560 942464 20 Dasshon Namy. 9057092628 21 Mures Nagda Ritika Ritika choudhary 22 9001973704 CALM 23 Villy Was 63-18128273 MOHD Shame Khan 2424946408 24 nutern. Mitor kumoe Maria 8523583219 25 VIPIN KUMAR 8107652586 VIEW KUMAR DAMOR 26 Lie Shills Ladno 27 28 \$690039954 29 8 10 7 10 4491 Damma Bon Aamna Band 30 99 39671624 14mm Khushi Sharma 7737193664 Dupanshu Rothers Neto Chaletowat 25 St Nicha Shaktawat 9521694587 9079101100 Nupur Palicual Hema Mal 9602355715 Hema 35 Ashok Singh Rama N 39 PND 9929713767

#### DEPARTMENT OF ACCOUNTANCY AND BUSINESS STATISTICS UNIVERSITY COLLEGE OF COMMERCE AND MANAGEMENT STUDIES MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSITY, UDAIPUR

	100000000000000000000000000000000000000	For Hotels on 9 May, 2	1	CLASS			
Sr. no.	Name	Mobile No.	Nignature	M.Com	MFC	M.Voc (ATA)	Other
37	ASHOK KUMAK SHAKMY	2664417552	Cloud				~
18	De Prope Salva	9982325121	Derty Loty				
10	le puota Jam	P314266913	1 die				-
40	Dr Publice Jain	9462436369	( with				
	Duris Nagra	2381142811	200			_	
F	Husan Chundanat	7942325015	hasin				
y	* Retid Sharma	9024820471	Tinks.	-			
A	Renak Jan	7127120714	Total.				
15	Chem dings	9185 117004	160m.	-			
46	Hozafe dehira	8230575415	Talle	-			
47 N	last thetrippe	#MAZ8# 28	last.				
48	Boil humbs Morna	78719 2562	PhU		V		
49	Rath Charle	ER15   33321	Colympia		V		
50	Dr Asha Shaeme	80055 16509	LAP		33/20	at and	-

3 of 3

(Shilpa Vardia)





#### seminar Report

हिंदी साहित्य, सिनेमा, समाज तथा अन्य माध्यम उद्घाटन सत्र

दिनांक 06·10·2023 समय प्रातः 11:00 से 12:30

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् एवं मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 06-07 अक्टूबर,2023 को हिंदी साहित्य, सिनेमा, समाज तथा अन्य माध्यम विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया | इस संगोष्ठी में देश के कई जाने-माने टीवी, वेब सीरीज तथा सिने कलाकार, निर्देशक, संगीतकार तथा पटकथा लेखक विषय विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए। कई विश्वविद्यालयों से आचार्य, सह आचार्य, सहायक आचार्य, शोधार्थी एवं विद्यार्थी भी इस कार्यक्रम में सिमिलित हुए | इस संगोष्ठी का शुभारंभ 06अक्टूबर,2023 शुक्रवार को स्वामी विवेकानंद सभागार में हुआ | उदघाटन सत्र में विभागाध्यक्ष डॉ॰ नीतू परिहार ने स्वागत उद्बोधन दिया | प्रसिद्ध रंगकर्मी, सिने-टीवी कलाकार अखिलेंद्र मिश्र ने मुख्य अतिथि के रूप में अपना उद्बोधन दिया | उन्होंने बताया कि भगवान शिव के डमरू से 14 सूत्र निकले | इन्हीं सूत्रों से सारी विद्याएँ, विधाएं और भाषाएँ निकली। संस्कृत भी इन्हीं में से एक है, जिसकी हिंदी समेत कई बेटियां हैं।उन्होंने कहा कि सृष्टि प्रदत्त भाषा है संस्कृत और हिंदी।

आयोजन सचिव डॉ॰ नीता त्रिवेदी ने कहा कि हम उस पीढ़ी के प्रतीक हैं जो टीवी पर चित्रहार, रामायण, चंद्रकांता संतित जैसे सीरियल देखते हुए बड़े हुए हैं। उन्होंने सिनेमा के दौर को याद करते हुए कहा कि उस समय सिनेमा मनोरंजन का साधन होने के साथ हमें भावनात्मक और रहस्य की दुनिया से भी जोड़े रखता था। विशिष्ट अतिथि प्रो॰ गौरव वल्लभ ने बताया कि हिंदी भाषा में जो अपनत्व, ममता, प्रेम, करुणा, वात्सल्य है, वह दुनिया की किसी भी भाषा में महसूस नहीं होता। कार्यक्रम की अध्यक्ष प्रो॰ सुनीता मिश्रा ने कहा कि ऐसी संगोष्ठी समय की मांग है।मुख्य वक्ता प्रो॰ पुनीत बिसारिया ने कहा कि साहित्य के बिना समाज नहीं है और समाज के बिना सिनेमा नहीं है।सभी एक दूसरे के बिना अधूरे हैं।विशिष्ट अतिथि प्रो॰ नीरज शर्मा ने कहा कि अगर हिंदी भाषा का एक शब्द भी आपके भीतर समा जाए तो आपको उच्च सम्मान मिल सकता है। इस अवसर पर डॉ॰ आशीष सिसोदिया की पुस्तक 'मेवाड़ी लोककला एवं लोकगीत' का विमोचन किया गया।तेजस पूनिया की दो पुस्तकों का भी विमोचन हुआ।अतिथियों को स्मृतिचिह्न भी भेंट किए गए। डॉ॰ नवीन नंदवाना ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

व्याख्यान सत्र

दिनांक *06-10-2023* समय *12:35* से *1:30* तक

स्थान : विवेकानंद सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

#### नाटक, सिनेमा, साहित्य और समाज

उद्घाटन सत्र के बाद व्याख्यान सत्र प्रारंभ हुआ जिसका संचालन डॉ॰ मुन्ना कुमार पांडे ने किया। इस सत्र में 'नाटक, सिनेमा, साहित्य और समाज' विषय पर प्रसिद्ध रंगकर्मी एवं अभिनेता अखिलेंद्र मिश्र ने अपना व्याख्यान दिया। इस सत्र में डॉ॰ मुन्ना कुमार पांडे के साहित्य एवं सिनेमा से संबंधित सवालों के जवाब अखिलेंद्र मिश्र ने अपने अनोखे अंदाज़ में दिए साथ ही उन्होंने अपनी पुस्तक 'अखिलामृतं' से कुछ कवितायें भी सुनाई।

प्रथम तकनीकी सत्र

दिनांक *06·10·2023* समय *2:30* से *4:00* तक

स्थान : विवेकानंद सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर साहित्य, समाज तथा अधुनातन माध्यम

(क्षेत्रीय सिनेमा तथा वेब सीरीज, प्रिंट मीडिया, शॉर्ट मूवीज तथा टीवी सीरियल)

भोजन के पश्चात् प्रथम तकनीकी सत्र प्रारंभ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता सोमेन्द्र हर्ष, निदेशक (RIIF), जयपुर ने की। वक्ता के रूप में आदित्य ओम (तिमल एवं हिंदी फिल्म निर्देशक), तरुण डुडेजा (लेखक एवं निर्देशक), चिन्मय भट्ट (फिल्म निर्देशक, गीतकार, संगीतकार एवं पटकथा लेखक), जिगर नागदा (निर्माता, निर्देशक एवं लेखक) एवं कुणाल मेहता (फिल्म निर्देशक, अभिनेता एवं लेखक) ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र में साहित्य, समाज तथा अधुनातन माध्यम जिसके अंतर्गत क्षेत्रीय सिनेमा तथा वेब सीरीज, प्रिंट मीडिया, विज्ञापन, शोर्ट मूवीज तथा टीवी सीरियल पर विस्तृत चर्चा हुई जिसमें दर्शकों की जिज्ञासाओं का भी प्रतिउत्तर दिया गया। इस सत्र में विषय से संबंधित 06 पत्र आए।

साहित्यिक कार्यक्रम

दिनांक *06:10:2023* 

समय सायं 7:30 से 9:00

स्थान : बप्पा रावल सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

शब्द ब्रह्म

#### (आखर से आख्यान की यात्रा)

06 अक्टूबर,2023 की शाम को 7:30 बजे से साहित्यिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका विषय रखा गया - शब्द-ब्रह्म (आखर से आख्यान की यात्रा) । इस कार्यक्रम में सिनेमा से संबंधित लेखक से संवाद किया गया । इस कार्यक्रम में मशहूर पटकथा लेखक सत्य व्यास से उनकी पुस्तक भीना मेरे आगे' पर चर्चा की गई। साथ ही फिल्म विश्लेषक तेजस पूनिया से भी उनकी पुस्तक पर चर्चा हुई। इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. मुन्ना कुमार पांडे ने किया।

#### द्वितीय तकनीकी सत्र

दिनांक *07-10-2023* समय प्रात: *10:30* से *11:30* 

स्थान : बप्पा रावल सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर सिनेमा तथा अन्य माध्यमों का समाज तथा साहित्य से अंतर्संबंध

07 अक्टूबर,2023 को प्रातः 10:30 बजे से द्वितीय तकनीकी सत्र प्रारंभ हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता प्रोर्संजीव दुबे (अध्यक्ष हिंदी अध्ययन केंद्र, गुजरात) ने की। इसमें वक्ता के रूप में उपस्थित विद्वानों में - प्रोर्भ अशोक कांबले (अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन और अनुसन्धान विभाग कर्नाटक), डॉर् विशाल विक्रम सिंह (सहायक आचार्य, हिंदी विभाग राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर), डॉर् आशीष सिसोदिया (सह आचार्य, हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर) तथा डॉर्न नवीन नंदवाना (सह आचार्य, हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर) ने सिनेमा तथा अन्य माध्यमों का समाज तथा साहित्य से अंतर्संबंध विषय

पर अपने विचार व्यक्त किए।इस सत्र में विषय से संबंधित 10 पत्र आए।मुख्य वक्ता प्रो. अशोक कांबले ने साहित्य की भाषा एवं सिनेमा की विकास यात्रा पर चर्चा की।

तृतीय तकनीकी सत्र

दिनांक *07:10:2023* समय प्रात: *11:35* से *12:40* 

स्थान : बप्पा रावल सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर सिनेमा तथा अन्य माध्यमों का सैद्धान्तिक एवं तकनीकी पक्ष

इसके बाद तृतीय तकनीकी सत्र प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता डॉ॰ मृत्युंजय सिंह (ओ॰एस॰डी॰ बंगाल सरकार, लेखक एवं निर्देशक) ने की। इसमें वक्ता के रूप में सुष्मिता सिंह (सह संस्थापक, उदयपुर टेल्स इंटरनेशनल स्टोरी टेलिंग फेस्टिवल), डॉ॰ मुन्ना कुमार पांडे (सह आचार्य, हिंदी विभाग, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय) डॉ॰ संदेश महाजन (सहायक आचार्य, पी॰डी॰ई॰यू॰ गांधीनगर, गुजरात) तथा डॉ॰ दीपा सोनी (सहायक आचार्य, अर्थशास्त्र विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर) उपस्थित रहे। इस सत्र का विषय था - सिनेमा तथा अन्य माध्यमों का सैद्धांतिक एवं तकनीकी पक्ष । इस सत्र में विषय से संबंधित 05 पत्र आए। डॉ॰ मृत्युंजय सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि भारतीय सिनेमा कला का एक अलग ही क्षेत्र है।विभिन्न कलाओं की तरह फिल्म निर्माण भी कला है। उन्होंने फिल्म निर्माण की सैद्धांतिकी को भी श्रोताओं को समझाया। इस अवसर पर डॉ॰ मृत्युंजय सिंह ने अपनी प्रसिद्ध कविता 'द्रौपदी' सुनाकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

दिनांक 07-10-2023

समय 12:45 से 02:00

स्थान : बप्पा रावल सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर सिनेमा तथा अन्य माध्यम : विविध आयाम

(पटकथा लेखन, गीत-संगीत, निर्देशन, छायांकन रिकार्डिंग, मार्केटिंग)

तत्पश्चात द्वितीय संवाद सत्र शुरू हुआ जिसका संचालन सोमेन्द्र हर्ष (निदेशक (RIIF), जयपुर) ने किया। इस सत्र का विषय था- सिनेमा तथा अन्य माध्यम : विविध आयाम (पटकथा लेखन, गीत-संगीत, निर्देशन, छायांकन रिकार्डिंग, मार्केटिंग)। इस सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में दिलीप सेन (प्रसिद्ध संगीतकार), चिन्मय भट्ट (फिल्म निर्देशक, गीतकार, संगीतकार एवं पटकथा लेखक) तथा कपिल पालीवाल (गीतकार) ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। संगीतकार दिलीप सेन ने कहा कि जब तक फ़िल्में रहेंगी, संगीत रहेगा। संगीत फिल्म की रीढ़ है।

समापन सत्र

दिनांक 07-10-2023

समय 3:00 से 04:30

स्थान : बप्पा रावल सभागार, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर हिंदी साहित्य, सिनेमा, समाज तथा अन्य माध्यम

समापन सत्र की अध्यक्षता सोमेन्द्र हर्ष ने की। मुख्य वक्ता के रूप में दिलीप सेन ने अपने संगीत एवं धुन की निर्माण प्रक्रिया के माध्यम से समां बांध दिया। उन्होंने गानों के माध्यम से दर्शकों का मन जीत लिया। उनहोंने कहा कि इस सृष्टि का संचालन तीन चीजों से होता है और वो है - सुर, लय और ताल। इन तीनों को मिलाकर ही संगीत बनता है। डॉ॰ आशीष सिसोदिया ने संगोष्ठी का प्रतिवेदन पढकर सुनाया। आयोजन सचिव डॉ॰ नीता त्रिवेदी ने सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन डॉ॰ नवीन नंदवाना ने किया। इसी के साथ दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हुआ।

Programme Title: "Dabu Indigo Printing"

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Yogesh Chhipa

Date: 12.04.2023

No. of Participants-50

Collaboration: Military Cant.

Objectives of the Programme:

• To teach individuals the traditional art and techniques of Dabu indigo printing

• To promote eco-friendly practices through Dabu printing, including the use of sustainable

materials and dyeing methods.

To provide a historical and cultural context for Dabu indigo printing, helping participants

appreciate its significance.

Outcomes:

Participants acquired the knowledge and skills needed to create intricate and beautiful

prints.

Participants explored their creativity and developed their own unique designs and

patterns in Dabu printing.

Learners achieved a deeper appreciation for the cultural and historical significance of

Dabu printing, connecting with the tradition and heritage behind the art.

Participants learned eco-friendly practices, encouraged to adopt sustainable and

environmentally responsible methods in their printing process

**Overview of the Programme:** 

The training was organised in a military cantt. area for the military men wives on 12th April 2023 with the objective of creating awareness about the traditional art of the Dabu printing among the women. The training was given by the locally trained artisan Mr Yogesh cheepa. His family is totally involved in this art. He explained every step by live demonstration of mud resist printing. Women themselves did this craft and enjoy a lot by creating scarfs, dupatta and kurta. The incharge of the department Dr. Dolly Mogra threw light on the historical and cultural significance of the Dabu print and explained about its significance in this era of ever changing fashion world.



Annexure –2

Programme Title: "Mandala Art"

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Resource Person: Ms. Yogini Dak

Date: 2. 06.2023

No. of Participants-36

Collaboration:

Objectives of the Programme:

• To provide a platform for participants to express their creativity and emotions through the

creation of mandala art.

• To promote an appreciation for the beauty and symmetry found in mandala art.

To teach the techniques and skills needed to create intricate and visually appealing

mandala designs.

To educate participants about the cultural and historical significance of mandalas in

various traditions.

Outcomes:

• Participants created their own unique mandalas, expressing their creativity and

individuality.

Participants achieved a better understanding of the cultural and spiritual significance of

mandalas in various traditions.

Mandala art workshops provided a platform of the participants to express themselves

artistically.

#### **Overview of the Programme:**

The workshop was organized by the Department of Fashion Technology and Designing on 2nd June 2023 for the 36 participants at Nehru hostel. The resource person for the training was Yogini Dak. She is a trained creative artist. Under the workshop the students were to explode about the mandala art. She finely demonstrated the art of mandala and also told about the key points in making fine and perfect mandala art. The training was basically organised to improve the skill of the students and also to enable them to start their own enterprise by using this historical and traditional technique of mandala. In this workshop the students prepared various samples in different shapes and sizes.

Dr. Dolly Mogra Incharge Department of Fashion Technology and Designing gave the detailed information regarding the importance and its use in this present era of globalization and also told the students how they can use this technique to start their own enterprise.

Programme Title: "Clay Pot Making"

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Resource Person: Ms. Yogini Dak

Date: 3 June 2023

No. of Participants- 36

Objectives of the Programme:

• To Provide a hands-on experience for participants to create their own clay pots.

• To Develop participants' skills in shaping, decorating, and firing clay pots.

• To Teach participants the traditional art of pottery and clay pot making.

• Potentially support local artisans and the pottery industry by encouraging interest in

handmade pottery.

Outcomes:

Participants acquired skills in working with clay, hand-building techniques, and pottery

craftsmanship.

Completing a clay pot boosted participants' self-esteem and sense of achievement.

Overview of the Programme:

The workshop was organized on 3rd June 2023 for the 36 participants at Nehru hostel. The

resource person for the training was Yogini Dak. She is a trained creative artist. Under the

workshop the students were explored about the various techniques of pot decoration with clay

moulds and different styles of painting on the pot. The training is basically organised to improve

the skill of the students and also to enable them to start their own enterprise by using this artistic

way of creating pots and other items of decoration. In this workshop the students prepared

various types of pots and decorative items by using clay and other techniques.

Dr. Dolly Mogra Incharge Department of Fashion Technology and Designing gave the detailed information regarding the importance and its use in this present era of globalization and also tell the students that by using their creativity they can develop many decorative items which are in demand.

Programme Title: " Lippan Art "

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Dimple Jain, Priyanka Jain

Date: 21 July2023

No. of Participants-50

Collaboration:

Objectives of the Programme:

• To acquaint students with the traditional Lippan art.

• To improve their creativity.

• To enhance their skill in lippan art.

Outcomes:

• They prepare many products by lippan art technique.

• Their speed of making products was also increased.

• Participants achieved a better understanding of the cultural and spiritual significance of

lippan art in various traditions.

• Lippan art workshops provided a platform of the participants to express themselves

artistically.

Overview of the Programme:

On 27th july 2023 a vibrant Lippan Art Training Workshop was conducted at Nehru hostel for

50 students], bringing together art enthusiasts and learners eager to explore the traditional folk

art form of Lippan. The workshop aimed to provide hands-on training, fostering creativity and

preserving the rich cultural heritage associated with this distinctive art.

The workshop included interactive sessions where participants could ask questions, seek

guidance, and engage in discussions with the instructor i.e Dimple and Priyanka. This fostered a

collaborative learning environment and allowed for a deeper understanding of Lippan art.

Participants were encouraged to express their creativity through both individual and group projects. This not only provided a platform for personal artistic expression but also promoted teamwork and camaraderie among the participants.

Towards the end of the workshop, an exhibition of the participants' Lippan art creations was organized. This showcase allowed participants to appreciate each other's work, share their experiences, and celebrate the diversity of artistic expressions within the Lippan art tradition. The Lippan Art Training Workshop proved to be an enriching and culturally immersive experience for all participants. It not only imparted practical skills in Lippan art but also provided a deeper appreciation for the cultural heritage embedded in this traditional folk art form

Programme Title: "Tri Colour Dupatta Making Workshop"

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Rekha Purohit

Date: 12.08.2023

No. of Participants-50

Collaboration:

Objectives of the Programme:

• To enhance knowledge about the mass production method.

• To learn how to complete a big order in a small time.

• To acquaint them with the raw material procurement.

Outcomes:

• They learned and practiced the mass production process.

• They get an understanding about the importance of time in completing order.

• They gained insight knowledge about raw material purchase.

• They prepare nice tri colour dupatta on time.

Overview of the Programme

On 12th August 2023, a "Tri Colour Dupatta Making Workshop" was organized under the guidance of the Department of Fashion Designing and Technology. The workshop aimed to celebrate the cultural diversity of our nation through the creation of tri-color dupattas, symbolizing the Indian flag.

Fifty enthusiastic participants gathered to learn and engage in the art of dupatta making. The workshop commenced with Dr. Dolly Mogra's opening remarks, emphasizing the importance of cultural expression and creativity.

Participants were provided with materials including fabric in saffron, white, and green colors, along with various embellishments such as sequins, beads, and embroidery threads. Under the expert guidance of Rekha Purohit and her team, participants learned different techniques including tie-dye, embroidery, and fabric painting to adorn their dupattas.

Throughout the workshop, participants displayed remarkable creativity, experimenting with different designs and patterns. The atmosphere was filled with joy and camaraderie as participants shared ideas and techniques with each other.

By the end of the workshop, each participant had successfully crafted their own unique tri-color dupatta, representing the spirit of unity in diversity.

Dr. Dolly Mogra concluded the event by congratulating the participants on their creativity and encouraging them to continue exploring their artistic talents.

The "Tri Colour Dupatta Making Workshop" was not only a celebration of artistic expression but also a reminder of the rich cultural heritage that unites us as a nation. It served as a platform for individuals to come together, learn, and celebrate our shared identity.

The success of the workshop would not have been possible without the dedication and guidance of Dr. Dolly Mogra and her team, as well as the enthusiasm and active participation of all the participants.

Overall, the workshop was a resounding success, leaving a lasting impact on all those who attended, and showcasing the power of creativity and unity in fostering cultural appreciation.

Programme Title: "Rakhi Making"

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Rekha Purohit

Date: 21.08.2023

No. of Participants- 36

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- To enhance their creativity.
- To develop the skill of rakhi making.
- To sensitize students about the hand made rakhi.

#### Outcomes:

- Students rakhi making skill was developed
- Their creativity was also improved.
- They start earning by selling their handmade rakhi.
- They understand the importance of handmade rakhi.

.

#### Overview of the Programme:

On 21st August 2023, a delightful Rakhi Making Workshop was organized at Nehru Hostel in which 36 students engage in the creative and traditional art of crafting Rakhi. The workshop aimed to celebrate the spirit of Raksha Bandhan, promote creativity, and provide an opportunity for participants to make personalized Rakhis for their loved ones.

The workshop began with an introduction to various materials used in Rakhi making, including threads, beads, sequins, and decorative elements. Different techniques such as braiding, beadwork, and embroidery were demonstrated to give participants a diverse range of options for creating their Rakhis.

To guide participants, expert Ms. Rekha Purohit and Ms. Chanda Sharma were invited to demonstrate advanced techniques and share tips for creating intricate and visually appealing

Rakhis. These demonstrations added value to the workshop by showcasing professional craftsmanship.

The Rakhi Making Workshop proved to be a delightful and engaging event, successfully achieving its objectives of promoting creativity and celebrating the cultural significance of Raksha Bandhan. Participants left the workshop not only with beautifully crafted Rakhis but also with a sense of pride in their creative abilities.

The success of the workshop underscored the importance of hands-on activities in celebrating festivals and connecting with cultural traditions. Participants expressed their appreciation for the opportunity to create personalized Rakhis, reinforcing the sentiment behind the festival of Raksha Bandhan – a celebration of love, protection, and the bond between siblings.

Programme Title: "Textile Surface embellishment"

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Resource person: Sophia

Date: 5-7 Sep.2023

No. of Participants-55

Collaboration:

Objectives of the Programme:

• Introduce participants to various techniques for surface embellishment.

• Teach participants how to enhance the appearance of surfaces through decorative

methods.

• Provide hands-on experience with different tools and materials used in surface

embellishment.

• Empower participants to incorporate embellishment techniques into their own artistic

or design practices.

• Encourage collaboration and sharing of ideas among workshop participants

Outcomes:

• Improved skills in applying decorative methods.

• Increased creativity and experimentation.

• Expanded knowledge of tools and materials.

• Empowered participants to incorporate techniques into their own work.

Overview of the Programme:

The programme was organised between 5-7 sep 2023 at Nehru hostel . The resource person of

the workshop was Ms. Sophia . She taught three different surface ornamentation techniques to

students-

1. Fabric painting

2. Kuch embroidery with three D outliner

3. Cutwork

Students enthusiastically participated in this workshop and prepared the article from each

technique.

The co ordinator of the workshop Dr. Dolly Mogra gave detailed information about the implication of these techniques in fashion garments. She also guide the students about the importance of traditional work on apparel in India as well as around the world.

Programme Title: "Clay Art: Ganesha"

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Rekha Purohit, Samiksha Sharma

Date: 17 Sep.2023

No. of Participants-80

Collaboration:

Objectives of the Programme:

• To send a message of eco friendly environment.

• To develop the skill of making Ganesha from clay among the students.

• To develop their creativity.

Outcomes:

• Eco-Friendly handmade Ganesha made by the students.

• Confidence was developed amongst students

• Students gained huge exposure from this workshop.

Overview of the Programme:

A one-day workshop on making eco-friendly Ganesh idol was organized in the Fashion

Technology and Designing Department of Mohanlal Sukhadia University. Under the direction of

art teacher Yogini Dak, As an innovation, seeds were put in the soil of the statues being made so

that after immersion the seeds could germinate and take the form of plants and help in

environmental protection.

Dr. Dolly Mogra, in-charge of the department, said that the department has been moving forward

in environmental protection since the beginning and on the auspicious occasion of Ganesh

Chaturthi, it has led the students towards innovation by putting seeds in the clay Ganesh idols

made by the students.

Programme Title: Terracotta Creations

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Dr. Sonu, Dr Rupali & Dr. Mamta

Date: 6.11.23 & 7.11.23 No. of Participants- 200

Collaboration:

#### Objectives of the Programme:

- Introduce the history and significance of terracotta.
- Provide hands-on experience in terracotta techniques.
- Foster creativity and artistic expression.
- Facilitate networking and collaboration.

#### Outcomes:

- Enhanced understanding of terracotta's cultural importance.
- Development of practical terracotta skills.
- Increased creativity and expression through artwork.
- Networking opportunities within the artistic community.

#### Overview of the Programme:

The Terracotta Workshop coordinated by Dr. Dolly Mogra was held on November 6th and 7th, 2023, with a total of 200 participants in attendance. The workshop aimed to introduce participants to the art and techniques of working with terracotta.

Throughout the two-day event, participants engaged in hands-on activities guided by experienced instructors, learning various methods of shaping, molding, and decorating terracotta creations. Dr. Dolly Mogra, along with her team of facilitators, provided Mr. Ghasiram comprehensive demonstrations and personalized assistance to ensure a fulfilling learning experience for all attendees.

The workshop covered fundamental techniques such as coil building, slab construction, and wheel throwing, allowing participants to explore their creativity and experiment with different forms and designs. Additionally, sessions on surface decoration techniques including carving,

painting, and glazing provided participants with a well-rounded understanding of terracotta artistry.

Interactive discussions and presentations by guest speakers further enriched the workshop, offering insights into the historical significance and contemporary applications of terracotta in art and architecture. Participants were encouraged to exchange ideas, share their experiences, and seek inspiration from one another, fostering a collaborative and supportive learning environment.

Overall, the Terracotta Workshop led by Dr. Dolly Mogra and her team was a resounding success, providing participants with valuable skills, knowledge, and inspiration to further explore the versatile medium of terracotta in their artistic pursuits. The event received positive feedback from participants, highlighting its effectiveness in promoting creativity, craftsmanship, and cultural appreciation within the community.

Programme Title: "Phad Painting"

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators: Dr. Meenaxi Mishra

Date: 26-27.10.23

No. of Participants-45

Collaboration:

Objectives of the Programme:

• Introduce students to the traditional art form of Phad painting, originating from Rajasthan, to promote cultural awareness and appreciation.

• To promote innovations and creativity.

• To raise the potentiality of the students.

• To encourage and build confidence among the new students.

• To provide an platform to showcase their talent

Outcomes:

• Students acquire and improve their painting techniques, gaining proficiency in the intricate details of Phad painting.

• Increase their cultural awareness towards Phad Painting.

• Increase in the Self confidence of the students.

• Talents and skills of the students have been Identified

Overview of the Programme:

The workshop on Phad Painting, organized by Dr. Dolly Mogra and Dr. Meenaxi Mishra, took place on 26-27 October 2023. The event aimed to introduce participants to the traditional art form of Phad Painting, originating from Rajasthan, India.

Day 1:

Dr. Dolly Mogra provided an overview of the history and cultural significance of Phad Painting.

Dr. Meenaxi Mishra demonstrated the traditional techniques and materials used in Phad Painting, including the use of natural pigments and cloth canvas.

Participants were guided through the initial stages of creating their own Phad Paintings, learning basic strokes and patterns.

#### Day 2:

Dr. Meenaxi Mishra led a session on advanced techniques in Phad Painting, including intricate detailing and color mixing.

Participants continued working on their own Phad Paintings, with guidance and feedback from the coordinators.

A mini-exhibition was organized where participants displayed their finished Phad Paintings, followed by a discussion on the experience and challenges faced during the workshop.

The workshop fostered appreciation for traditional art forms and encouraged participants to continue exploring and preserving such cultural heritage.

The workshop on Phad Painting was a resounding success, thanks to the efforts of Dr. Dolly Mogra, Dr. Meenaxi Mishra, and the enthusiastic participation of 45 attendees. It not only provided valuable insights into a traditional art form but also served as a platform for cultural exchange and artistic expression.

Traditional Wall Hanging (Birds)

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

**Co-Coordinators:** 

Date: 13.2.2024 – 16.2.2024

No. of Participants-15

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- To teach participants traditional techniques for creating wall hangings featuring bird motifs.
- To enhance skills in textile art and craft.
- To foster appreciation for traditional craft and design methods.

#### Outcomes:

- The students were able to try their creativity in making traditional wall hanging.
- They learned the technique and art of creating wall hangings.

#### Overview of the programme:

The "Traditional Wall Hanging (Birds)" programme, coordinated by Dr. Dolly Mogra from February 13 to February 16, 2024, engaged 15 participants in crafting traditional wall hangings. The workshop focused on techniques for designing and creating wall hangings with bird motifs, emphasizing traditional methods and craftsmanship. Participants received step-by-step instruction, including guidance on materials, patterns, and execution. The event concluded with an exhibition of the participants' work, showcasing their creativity and newly acquired skills. The programme successfully blended traditional art with practical learning, allowing participants to create unique decorative pieces and gain deeper insight into textile arts.

# Report of the International Conference on "Minerals, Mining and Metallurgy in South Asia: Historical Perspectives", dated 11-12 January, 2024

The International Conference on "Minerals, Mining and Metallurgy in South Asia: Historical Perspectives" was organised on 11 - 12 January 2024 by the Department of History, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur at the Golden Jubilee Guest House of MLSU. The proposal of the conference was submitted to ICSSR on 27 September 2023. Rajasthan States Mines and Minerals Limited, Wonder Cement, and Hindustan Zinc Limited agreed to help in the conference. The conference brochure and invitation was sent to many Universities of India and abroad. About 71 abstracts were received and 50 of them were taken for presentation in the conference. There were about 40 physical participants and the rest of the papers were discussed online.

The inaugural session began at 10:30 AM on 11 January 2024 at the Conference Hall, Guest house. On the dais were Chief Guest: Lieutenant General Anil Kapoor AVSM, VSM Retired, Keynote Speaker: Padmashri Professor Sharada Srinivasan (Professor, School of Humanities, National Institute of Advanced Studies, Indian Institute of Science Campus, Bangalore; International Honorary Member, American Academy of Arts and Sciences; Member, Advisory Board, Exeter University; Hon. Exeter University Fellow; Member, Advisory Board, Institute of Archaeometallurgical Studies, London; Dr. Kalpana Chawla Woman Scientist Awardee; Padmashri Awardee in Archaeology.), Guest Speaker: Dr. Shri Krishna Jugnu, Guest of Honour: Prof. Chulani Rambukwella from Sri Lanka (Chair Professor of Archaeology, Department of Archaeology, University of Peradeniya, Sri Lanka) Professor Sunita Mishra, HVC, MLSU, Prof. Pratibha, HOD and Dr. Peeyush Bhadviya, Conference Convener. In the audience were distinguished guests, participants, and students of History Department.

After all technical sessions, Valedictory session was conducted from 5:15 pm to 6:30 pm. It was chaired by Prof. Pooranmal Yadav, Faculty Chairman, Social Sciences, MLSU, Chief Guest was Brig. Sandeep Kumar, VSM, Valedictory Address was given by Prof. Jeevan Singh Kharakwal from Janardan Rai Nagar Rajasthan Vidyapeeth, Prof. Pratibha, HOD, History, MLSU and Dr. Peeyush Bhadviya was also on dais.

Participants from Foreign Nations: Dr. Naira Mrktchyan from Armenia (Diplomat, T.V. Anchor, Writer, Orientalist, Lecturer, Northern University, Yerevan, Republic of

we sign

4 14 101 2021 AD HISTORY

Armenia.), Prof. Poonam R.L. Rana from Nepal (Associate Professor, Nepalese History Culture & Archaeology, Tribhuvan University, Nepal), Prof. Chulani Rambukwella (Chair Professor of Archaeology, Department of Archaeology, University of Peradeniya, Sri Lanka), Upeksha Gamage (Senior Lecturer, Department of History and Archaeology, University of Ruhuna, Sri Lanka.), Dr. Sonali Dasnayke (Lecturer, Department of History and Archaeology, University of Ruhuna, Sri Lanka.), Dr. R.M.N.P.K. Jayasinghe (Gem and Jewellery Research and Training Institute, Welivita, Kaduwela & Postgraduate Institute of Science, University of Peradeniya, Peradeniya, Sri Lanka) from Sri Lanka; Online Participants: Prof. Som Prasad (Professor, Central Department of Nepalese History, Culture and Archaeology Tribhuvan University, Nepal) from Nepal, Alkesh Zaveri from U.S.A., Githa U.B. from Sweden.

Participants from India 1 JAMMU: Dr. Anita Gupta (Assistant Professor, Department of History, Central University, Jammu, JKUT, India.), Dr. Tirthraj Bhoi (Assistant Professor, Department of History, Faculty of Social Sciences, University of Jammu, Jammu, JKUT, India.) 2 UTTAR PRADESH: Dr. D.P. Sharma (B.H.U., Varanasi, Uttar Pradesh, India.), Dr. Madhuri Sharma (B.H.U., Varanasi, Uttar Pradesh, India.), Dr. Ravindra Kumar (Assistant Professor, Department of Ancient History, Culture and Archaeology, University of Allahabad, Prayagraj, Uttar Pradesh, India.) 3 UTTARAKHAND: Prof. Yogambar Singh Farswan (Professor in Environmental Archaeology, Department of History, Ancient Indian History, Culture and Archaeology, Hemvati Nandan Bahuguna Garhwal University (A Central University), Srinagar Garhwal, Uttarakhand, India), Dilshad Fatima (Ph.D. Research Scholar, University of Allahabad, Prayagraj, Uttar Pradesh, India.) 4 HARYANA: Prof. Bhagat Singh (Professor, Department of Ancient Indian History, Culture & Archaeology, Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana, India.), Prof. Rajpal Singh (Professor, Department of Ancient Indian History, Culture & Archaeology, Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana, India.) and Ms. Monu (Ph.D. Research Scholar, Department of Ancient Indian History, Culture & Archaeology, Kurukshetra University, Kurukshetra, Haryana, India.) 5 DELHI: Dr. Rimjhim Sharma (Assistant Professor, Department of History, PGDAV College, Nehru Nagar, New Delhi, India.), Dr. Vandana Singh (Kalasampada, New Delhi, India), Lt. Gen. Anil Kapoor, AVSM, VSM, Grp. Capt. R.S. Mehta SC (General Secretary, Indus International Research Foundation, New Delhi, India.), Debyani Mukherjee (M.A. Anthropology, IGNOU, Delhi & M.A. Archaeology, Indian Institute of Heritage, Noida, Uttar Pradesh, India.), 6 GUJARAT: Prof. Arun Vagehla (Professor, Department of History, Gujarat University, Ahmedabad, Gujarat, India.), Dr. Nandan Shastri (Freelance Museologistcum-Geologist, Gujarat, India.), Dr. Dinesh Pancholi (Freelance Museologist-cum-Geologist,

Gujarat, India.), Dr. Rita Parikh (Associate Professor, Department of Sanskrit, Mr. and Mrs. P.K. Kotwala Arts College, Patan, Gujarat, India.), Dr. Meena Agrawal (Assistant Professor, History Department, Mr. and Mrs. P.K. Kotwala Arts College, Patan, Gujarat, India.), Dr. Bhangraj Choudhary (Assistant Professor, History Department, Arts College, Deesa, Gujarat, India.) 7 MAHARASHTRA: Prof. Madhu Kelkar (Professor, Department of Foundation Course, HR College of Commerce and Economics, Churchgate, Mumbai, Maharashtra, India), Dr. Nandita Moitra (Assistant Professor, Guru Nanak College of Arts, Science and Commerce, Guru Tegh Bahadur Nagar, Sion, Mumbai, Maharashtra, India.), Dr. Madhumita Bandopadhyay (Smt. P.N. Doshi Women's College, Ghatkopar, Mumbai, Maharashtra, India), Dr. Shaikh Musak Rajjak (Associate Professor & Head, Department of History, Maulana Azad College of Arts, Science & Commerce, Aurangabad, Maharashtra, India), Dr. Kazi Yasmin Papamiya (Faculty Member, Department of History, Maulana Azad College of Arts, Science & Commerce, Aurangabad, Maharashtra, India), Dr. Balaji Chirade (Associate Professor, Department of History, Central University, Warda, Maharashtra, India) 8 GOA: Prof. Louisa Rodrigues 9 KARNATAKA: Padmashri Prof. Sharada Srinivasan (Professor, School of Humanities, National Institute of Advanced Studies, Indian Institute of Science Campus, Bangalore; International Honorary Member, American Academy of Arts and Sciences; Member, Advisory Board, Exeter University; Hon. Exeter University Fellow; Member, Advisory Board, Institute of Archaeometallurgical Studies, London; Dr. Kalpana Chawla Woman Scientist Awardee; Padmashri Awardee in Archaeology.), Brigradier Sandeep Kumar VSM (President Indus International Research Foundation New Delhi, India), Lt. Gen. C.A. Krishnan PVSM, UYSM, AVSM (online) 10 KERALA: Ahira Chandra Babu (Ph.D. Research Scholar, Department of Sanskrit Sahitya, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady, Kerala, India. ) (online) 11 TAMIL NADU: Dr. S. Vasanthi (Deputy Superintending Archaeologist (retd.)), Dr. Rajesh (Assistant Professor, Kongunadu Arts and Science College, Coimbatore, Tamil Nadu, India.) and Dr. Rajalakshmi (Assistant Professor, Department of Tamil, Kongunadu Arts and Science College, Coimbatore, Tamil Nadu, India.) 12 RAJASTHAN: Dr. Hansmukh Seth (Associate Curator, The City Palace Museum, Udaipur, Rajasthan, India.), Dr. Arvind Kumar (Geological Survey of India, Field Training Centre, Zawar, Udaipur, Rajasthan, India), Dr. Shrikrishna Jugnu (Renowned historian, Udaipur, Rajasthan, India.), Dr. A.K. Grover (Dy. D.G. (Retired), Geological Survey of India) (online) Dr. P.R. Golani (Formerly Director, Training Institute, Geological Survey of India, Zawar Centre, Udaipur, Rajasthan, India.) (online), Dr. Suman Rathore (Associate Professor

Government College, Khairwada, Udaipur, Rajasthan, India.), Mangilal Mahawar (Assistant Professor Government Post Graduate College, Dausa, Rajasthan, India.), Mohit Shankar Sisodia (Ph.D. Research Scholar, Department of History, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, Rajasthan, India.), Kriti Kataria (Ph.D. Research Scholar, Department of History, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, Rajasthan, India.), Suresh Kumar (Ph.D. Research Scholar, Department of History, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur, Rajasthan, India.)

The following sessions were conducted

### Day 1st: 11.01.2024 Plenary Session - 1: Conference Hall

Time: 01 P.M. to 02:50 P.M.

Archaeometallurgy of Copper Hoard in India  Mineral Passas 200 Copper Hoard in India	
Mineral Resources of Sri Lanka: An Archaeological and Historical	Dr. D.P. Sharma
Review Review An Archaeological and Historical	Prof. Chulani Rambukwella
Silver Mines from the 4 <sup>th</sup> millennium BCE: A Global Perspective	
The Mineral Kingdom (Focus on Jewellery) & its Symbolic Values in	Dr. Nandan Shastri
Nepal Nepal (1 ocus on Jewellery) & its Symbolic Values in	Dr. Poonam R.L. Rana

## Parallel Technical Session - 1: Conference Hall

Time 3 P.M. to 04:30 P.M. Session Chair: Prof. Arun Vaghela & Dr. Nandita Mo

1	Copper Workings and Ritual Artefacts in the Chotanagpur Region: A Survey of Typological Variations	itra Dr. Rimjhim Sharma
3	Historical Significance Conveyed by Coins	
	प्राचीन भारत में धातकर्म विरामत	Dispute N. C. Friedrich
	Archaeometallurgy of Buddhist Metal Images of Court II I	डॉ. शीतल ए. अग्रवाल Dr. Madhuri Sharma

### Parallel Technical Session - 2: Meeting Hall Time: 3 P.M. to 04:30 P.M.

Session Chair: Dr. Nandan Shastri & Dr. Shaikh Musak Rajjak

1	आयुर्वेद में धातुओं और खनिजों का उपयोग (चरक संहिता के संदर्भ में)	
2	Foreign Travelogues as Source of Indian Gemmological Knowledge System	डॉ. रीटा एच. पारेख Dr. Kazi Yasmin Papamiya
3	Sands at Risk: Analyzing Consequences and Paving the Way for Sustainability	Kriti Kataria
4	Harappan Metals and its Sound Beauty	Dilshad Fatima
5	Mines and Metallurgy during Manager P. 1	Debyani Mukherjee

Plenary Session - 2: Conference Hall Time: 04:45 P.M. to 06:45 P.M.

Tea

Tea

Tea

Session Chair: Prof. Yogambar Singh Farswan New insights into the metallurgy of Rajghat Iron (600-400 BCE) from the Dr. Vandana Singh Middle Ganga plains of India Exploring the Indian Knowledge System: Advanced Metallurgy and Dr. Amita Gupta Copper Extraction Techniques in the Himalayas Dr. Sonali Dasanayake & Rituals and Traditions: The Spiritual Dimensions of Gem Mining Dr. Upeksha Gamage Practices in Sri Lanka R.M.N.P.K. Jayasinghe Sedimentology and Geochemistry of Kalu River Gem-bearing Sediments in Sri Lanka: Implication for Provenance and Paleoclimate Documentation Issues of Objects, Ornaments, Tools, Weapons During Dr. Balaji Chirade Maratha Period Gp. Captain (Retd.) R.S. Belt and Road Initiative: A Quest for Mineral and Energy in South Asia

Dinner

#### Day 2nd: 12.01.2024

Breakfast

Mehta

### Online Parallel Technical Session - A: Conference Hall

Time: 9 A.M. to 10:45 A.M.

Session Chair: Gp. Captain (Retd.) R.S. Mehta, SC & Dr. Naira Mkrtchyan

	Archaeological Heritage and its management in Lastern Repair	Prof. Som Prasad Khatiwada
2	Ancient Gold Mines of Bhukia and Hinglaz Mata-Bharkundi Prospects in South Rajasthan and their Probable Antiquity	Dr. Ashok Kumar Grover
3	Ancient and Medieval Mining and Metallurgy and its Significance in the	Dr. P.R. Golani
4	History of Rajasthan	Lt. Gen. C.A. Krishnan
5	Unveiling Karnataka's Golden Past: Ancient Mining Technologies	Dr. Harihara Sreenivasa Rao

### Online Parallel Technical Session - B: Meeting Hall

Time: 9 A.M. to 10:45 A.M.

Session Chair: Prof. Madhu Kelkar & Dr. Balaji Chirade

Session Chan. 1101. Madia 12011 3	
	Dr. Tirthraj Bhoi
Megalithic Sites	D C 1: Cl -#i
	Dr. Sandip Chatterjee
Colonial Period	V 3
ज्यपर के कच्छवाहा राजवंश के सैन्य हथियार और धात्कर्म	डॉ. सुमन राठौड़
	एवं मांगीलाल महावर
A Study of Indigenous Brass Metal Handicraft & Industry of Hajo,	Dimpy Talukdar
Accam	
Sculptures as Repertoire of Mineral Resources: With special Reference	Deepika Ravjani
Genetaries and Cultural Exchange: Indian Gemstone Trade Along the	Pallavi Mohanan
Gemstones and Cultural Exchange : Indian College City Pood	
Maritime onk Road	Apeksha Gandotra
Unmasking the Veil of Gender: women in Underground Willes	
Mercury in Rasaratnasamuccaya: Retrieving Lost Traditions	Athira Chandrababu
Mines, Minerals and Colonial Institutions in India: Some Observations on the Asiatic Society of Bengal and Geological Survey c. 1780s–1880s	Himadri Mukherjee
	A Study of Indigenous Brass Metal Handicraft & Industry of Hajo, Assam  Sculptures as Repertoire of Mineral Resources: With special Reference to Abaneri, Rajasthan  Gemstones and Cultural Exchange: Indian Gemstone Trade Along the Maritime Silk Road  Unmasking the Veil of Gender: Women in Underground Mines  Mercury in Rasaratnasamuccaya: Retrieving Lost Traditions  Mines, Minerals and Colonial Institutions in India: Some Observations

10 *Pañcaloha*: A Metallurgical Analysis of a Five-Metal Alloy from the Devahar V. *Tantrasamuccaya* 

### Plenary Session - 3: Conference Hall

Time: 11 A.M. to 1 P.M. Session Chair: Dr. D.P. Sharma

1	An Overview of the History of Metallurgy in the Indian Subcontinent	Prof. Yogambar Singh
	Discount of the Research of the Control of the Cont	Farswan
2	Coalescing Development: Coal Trade and Technology in British India with special reference to Bombay Presidency (1774-1947)	Prof. Madhu Kelkar
3	Metal and Metallurgy in Painted Grey Ware Phase (With Special	Monu & Dr. Bhagat Singh
4	Agate Industry in Cambay: A Historical Perspective and Present Context	
5	A Comparative Study Between Ancient and Modern Pyrometallurgical Techniques Related to Extraction of Zinc from Sphalerite-rich Ores: A Global Perspective	Dr. Arvind Kumar

Lunch

#### Plenary Session - 4: Conference Hall

Time: 2 P.M. to 3:30 P.M. Session Chair: Prof. Bhagat Singh

Tron Bhagar Shigh	
	Neelam Sharma & Prof. Rajpal Singh
An Insight into the Intriguing Journey of Diamonds in India from Past to Present	Dr. Nandita Moitra
Managand Medalloray and its Sagas accured in the Paragonal	Dr. Madhumita Bandyopadhyay
Thakkar Pheru: A Shrimal Jain Expert on Gemology, Numismatics & Metallurgy in Medieval India	Dr. Shaikh Musak Rajjak
Metallurgy in Ancient Armenia : Export of Metallic Items to Eastern and Western Countries	Dr. Naira Mkrtchyan
	A Study of Harappan Metal Kilns in the Eastern Domain with Special Reference to Haryana  An Insight into the Intriguing Journey of Diamonds in India from Past to Present  Iron Foundry at Poonassa: Debates, Deliberations and Outcomes  Thakkar Pheru: A Shrimal Jain Expert on Gemology, Numismatics & Metallurgy in Medieval India  Metallurgy in Ancient Armenia: Export of Metallic Items to Eastern and

Tea

#### Plenary Session - 5: Conference Hall

Time: 3:45 P.M. to 4:45 P.M. Session Chair: Prof. Rajpal Singh

1	Traditional Practices of the use of Minerals and Metals in Ayurvedic Medicines, with Special Reference to the Pre-medieval Period	born (hinofr)
2	Ancient Metal Coin Minting Techniques in Ancient Sri Lanka: Metals, Methods, and Administrative Insights	Dr. Upeksha Gamage & Dr. Sonali Dasanayake
3		Dr. Hansmukh Seth
4	Mineral Resources of Southern Rajasthan, An Attraction to Ancient Civilization Settlements (Evidenced by Presence of Ancient Mining Activity Along Archaean Proterozoic Boundary)	Diksha Pande, N.K. Chauhan, Abhay S. Dashora, Kavita Bharadwaj

Tea









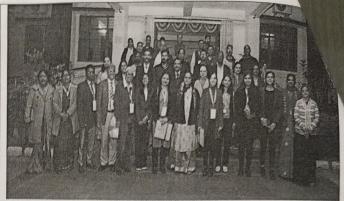












#### Newspapers

#### अंतरराष्ट्रीय संगोष्टी का पोस्टर विमोचन



उदयपुर। सुविवि के इतिहास विभाग द्वारा 11 एवं 12 जनवरी को मिनरल्स, माइनिंग एंड मेटालर्जी इन साठथ एशिया- हिस्टोरिकल पर्सपिक्टव्स विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोधी के पोस्टर का विमोचन कुलपति प्रो. सुनीता मिश्रा ने किया। संगोधी समन्वयक डॉ पीयूप भादविया ने बताया प्रो. सुनीता मिश्रा ने किया। संगोष्ठी समन्वयक डी पीयूप भादविया ने बताया कि इसमें विशिष्ट व्याख्यान सहित करीज 60 शोधपत्रों की प्रस्तुति होगी। देश-विदेश से 60 प्रतिभागी उदयपुर आ रहे हैं। आने वाले विद्वानों में अमेंनिया, नेपाल एवं श्रीलंका के प्रोफेसर शामिल हैं। भारत के 14 राज्यों से प्रतिनिध उदयपुर में होंगे। मुख्य रूप से पद्मश्री प्रो. शारदा श्रीनिवासन, प्रो. चुलावाला, प्रो. पुनम राणा, प्रो. योगंबर सिंह, ग्रो. भगतिसह, प्रो. प्राजीत कुमार पलीत, प्रो. अविका ढाका, प्रो. देवपुक्काश शर्मा, प्रो लुईसा रोड्रिस्स, प्रो. बीनस जैन, प्रो. जीवन खरकवाल, डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, डॉ. नाइस मार्कच्यान आदि संगोष्ठी के विषय पर प्रकाश डालंगे।

## अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के पोस्टर का विमोचन

विभाग की 11 एवं 12 जनवरी को मिनरत्स, माझनेंग एड मेटालजी इन साउच एरियाः हिस्टोरिकल पसंपेक्टिका विषय पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी होगी।

शनिवार को इसके पोस्टर का विमोचन कुलपति प्रो. सुनीता मिश्रा ने किया। सामाजिक विज्ञान संकाय विभागाध्यक्ष प्रो. प्रतिभा, डॉ. पीयूष समन्वयक डॉ पीयूष भावविया, प्रतिनिधि उदयपुर आएगे। मुख्य रूप संगोच्ती में शामिल होंगे।



अध्यक्ष प्रो. पूरणमल यादव, इल्हिंग्स व्याख्यान सहित करीब 60 शोधपत्रों की प्रस्तुति होगी। इसमें अमेनिया, भाविषया, डॉ विनीत सोनी, राकेश्य नेपाल एवं शीलका के प्रोफेसर प्रोजीत कुमार स्वीत हो. अविका जैन उपस्थित है। संगोधी शामिल होंगे। भारत के 14 राज्यों से आका, डो. देवप्रकाल शर्मा आदि

से पद्मश्री प्रो. शारदा श्रीनिवासन प्रो



12-01-2024

उदयापुर

संगोष्टी • माइनिंग एंड मेटलर्जी इन साउथ एशिया पर दो दिवसीय आयोजन शुरू, विशेष सत्र में बोले वक्ता

# दक्षिण राजस्थान में धातुओं की कई खानें, इसलिए आक्रमणकारियों के लिए हमेशा रण बना रहा मेवाड़

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

दक्षिण राजस्थान एशिया महाद्वीप में समृद्धि का सूचक रहा है। संसार के व्यापारियों और धातुषिदों की पैनी नजर इस क्षेत्र के जावर, दरीवा, आगुचा जैसी खानों पर रही और देशका, आनुवा जसा खाना पर रहा जार हजार वर्ष पहले भी कर्नाटक, गुजरात, पंजाब, सिंध आदि के ज्यापारी मेवाड़ आकर बसे, जो राजकीय संरक्षण में धातुओं का ज्यापार कर संसार की औद्योगिक और

व्याधार कर सरकार का आधारणक और सामाजिक प्रगति के सूत्रधार बने। यह विचार सुविवि में मिनतल्स, माइनिंग एंड मेटलर्जी इन साउध पुशिया पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोध्डी में विशेषजों ने रखे। हिस्सीरिकल पर्सपिकटका विषय पर आयोजित संगोप्टि के पहले दिन गुरुवार को पदाश्री प्रसिद्ध धारिकक इतिहासकार प्रो. शारदा श्रीनिवासन ने कहा कि धातु केवल धन ही नहीं, मानवीय संस्कृति के उन्नति का बोधक भी है। धातु हमारे अलंकरण, मूर्ति, द्वार आदि

के लिए उपयोगी रहे और भारत में हर युग में धातु का महत्व रहा है। इतिहास, हमारे व्यापार और संबंधों को भी यदि परिभाषित करता है तो उसके मूल के धातु और धन ही हैं। मेबाड़ की धरती इसका पर्याय है।

हैं। मेखाड़ की धरती इसका पर्याय है। विशिष्ट वक्ता श्रीत्नेका की ग्रो. चुलानी रामकुकवेला ने कहा कि राजस्थान की खिन सम्प्रदा पर संसार की नजर रहती है। यह धातु की धरती है। लंका, कर्नाटक आदि के अधिलंखीय प्रमाण धातु और संबंधों को संपाइने के लिए बड़े उपयोगी हैं। मेखाड़ के प्रसिद्ध इतिहास और संस्कृतिविद्द डॉ. श्रीकृष्ण चुग्गून ने मेबाड़ को धालिक खनिज सम्प्रदा की भूमि बताया और दरी, दरीबा, जावर, आपूर्चो, भूखिया आदि में प्राचीन काल से ही हो रही खनन गतिविधियों को इतिहास की दृष्टि से सहत्वपूर्ण बताया। उनका कहना था कि धालिक समुद्धि के कारण ही मेवाड़ खाई धारियक समृद्धि के कारण ही मेबाड़ ढाई हजार वर्षों तक आक्रमणकारियों के लिए रण बना रहा।



धातु की उपलब्धि और समृद्धि, देशों की उन्नति को परिभाषित करती

मुख्य अतिथि ले. जनरल अनिल कपूर ने कहा कि धातु की उपलिच्धि और समृद्धि, देशों की नि जा अराजिक आर समृद्धः, दशी की उन्नति को परिभाषित करती है, कोहिन्स एक उदाहरण है। खार्ने हमें समृद्ध बनाने वाली रही है। यह विषय हमें नई पीढ़ियों को पढ़ाने चाहिए, क्योंकि यह आरमिनभैरता के सुन्दर उपाय हैं। सुविवि कुलपति प्रो. सुगीता मिश्रा ने कहा कि धातु और उसकी धारणा को हम कोई कभी नहीं भूल सकते, वयाँकि वे एमारे वैनिक जीवन से जुडे हुए हैं। विभागाध्यक्ष प्रो. प्रतिभा ने देश-विदेश से आने वाले शोधार्थियों,

अध्येताओं का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन दीपांशी धाकड़ व सुचिता हिरण ने किया। डॉ. भादविया द्वारा संपादित एनीमल्स इन साउथ प्रियन हिस्ट्री और भारतीय इतिहास में प्रशु-पक्षी तथा संगोध्ती की स्मारिका विमोचन किया गया। इस संगोध्ती में आर्मेनिया की डॉ. ावला गया। इस समायदा में आमानंदा की डा. नायदा मर्कचयन, नेपाल की प्रो. पूनाम आर.एल, राणा, श्रीत्कंता से डॉ. सोनाली दसनायके, डॉ. दसनायके, डॉ. उपेक्षा गमांग, प्रो. चुलानी रामखुकबेला, नलिन जयंसिंह सहित भारत के 14 राज्यों से प्रतिनिधि शामिल हुए हैं।

# खनिज सम्पदा समृद्धि की पर्याय



पत्रिका न्यूज नेटवर्क patrika.com

उवसपुर . दक्षिण राजस्थान संपूर्ण एशिया में समृद्धि का सुचक रहा है। संसार के व्यापारियों एवं धातुविदों की हिन्द इस क्षेत्र के जावर, दरीबा, आगुचा आदि खानों पर रही और हजार वर्ष पहले भी कर्नाटक, मुजरात, पंजाब, सिंध आदि के व्यापारी मेवाइ आकर बसे, जो राजकीय संरक्षण में धातुओं का व्यापार कर संसार की ओद्योगिक और सामाजिक प्रगति में सुत्रधार बने। यह विचार गुरुवार को सुखाड़िया विश्वविद्यालय में शुरू हुई भिनरत्नर, माइनिंग एंड भेटेलर्जी इन



सुव्याध्या जरुवावधालय भ सुरू हुइ 'मिमस्तर, पाइनिंग पुढ़ घेटेलाई इन ले. जनरल अनिल कपूर ने कठा कि धातु और उसकी धारणा को जारदा श्रीनिवासन ने कठा कि धातु साउब एशिया हिस्टोरिकल धातु की उपलिक्ष और समृद्धि देशों हम कोई कभी नहीं भूल सकते, केळल धन हो गई, मानविव संस्कृति पसंपेक्टिय है केळ-विदेश से आए कोहिन्स एक उडाहरण है। अञ्चाबता हुए हैं। उद्गाटन सम् में पढ़ांसी से बक्ता श्रीलक्ष की प्रे. चुलानी विद्वानों ने ब्यक्त किए। मुख्य अतिथि कर रही कुलाति ग्री साम्बान

की खनिज सम्पदा पर संसार की नजर रहती है। यह धातु की धरती है। नजर रहता है। यह आतु का घरता है। इतिहासकार डी. श्रीकृष्ण जुगतु ने मेखाइ को धाल्यक खान्ज सम्यद्य की भूमि बताया। विभागध्यक्ष प्री. प्रतिका ने संगोद्धी की उपयोगिता वताई। संचालन दीपांशी धाकड़ एवं सुचिता हिरण ने किया। उद्घाटन पर हाँ पीयूप जदिवया द्वारा संपादित एनिमल्स इन साउथ एतियन हिस्ट्री और भारतीय इतिहास में पशु-पक्षी तथा संगोष्ठी को स्मारिका विमाचन अतिथियों ने किया। संगोष्ठी में अमेनिया को डॉ. नायरा मर्कवयन, नेपाल की प्रो. पूनम आरएल राणा, श्रीलंका से डॉ. सोनाली दसनायके, डॉ. दसनायके, डॉ. उपेक्षा गर्मांग, प्री युलानी रामबुकवेला, नलिन जर्यासह सहित भारत के 14 राज्यों से प्रतिनिधि शामिल हुए।

12/01/2024 | Udaipur City | Page : 6 Source: https://epaper.patrika.com/

उदयपुर, सोमवार 15 जनवरी 2024

6

#### बाजार / समाचार

#### मेवाड़ की खनिज संपदा समृद्धि की पर्याय

उद्धयपुर। खनिज संसाधन, खदान और धाल्लिकी के आर्थिक एवं वेदानिक महल्ल पर यहां मुखाड़िया विश्व विद्यालिक की गई। इसमें चलाजों के कारण संपूर्ण एवं पाणिया में समृद्धि का मुचक रहा है। संसार के ज्यापार्ट्यो एवं धाणुविदों की दृष्टि इस के जे के जावर, दरीबा, आगुवा आदि खानों पर रही और रहार पर पहले पी कर्नाटक, गुजरात, पंजाब, जिल्ला कारण कर संदार की आधीनक आगर के खागारी में साह आवर का स्वार कर संदार की आधीनक आगर का स्वार कर संदार की आधीनक आगर का स्वार कर संदार की आधीनक आगर का स्वार कर संदार की आधीनक जावर सामाजिक प्रगति में सुस्रमंत्र के आधीनक आगर का स्वार कर संदार की आधीनक का संदार कर संपार कर संदार की आधीनक का संदार का संदार की स्वार का संदार का संदार का संदार की संदार की संदार का संदार की संदार का महल के धात और पन ही है। संदार का संदार के साम संदार का संदार की साम संदार का संदार की संदार का संदार की संदार का महल के धात और पन ही है। संदार का संदार का संदार का संदार की साम का संदार की संदार का संदार की साम का संदार की साम

श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने मेवाड़ को धारिवक खनिज सम्पदा की भूमि बताया और दरी, दरीबा, जावर, आगुका, भूखिया ( बांसवाज़) आदि में प्राचीन काल से ही



हो रही खनन गतिखिष्यों को इतिहास को दृष्टि से महत्वपूर्ण जताया। उनका कहना था कि भारितक समृद्धि के कारण हो नेवाइ हाई हजार वर्षों तक आक्रमणकर्तारों के लिए रण बना रहा। इस क्षेत्र के भारी सकरा के सीदागर 8 वी राज कर के कि सकरा के सीदागर 8 वी राज कर के कि सकर रहें थे। विशिष्ट चका श्री लंका की ग्री प्राच्या की खान के सम्बद्धित के सम्बद्धित र संस्था भर की नजर रहती है। यह धातु की धात्र की नजर रहती है। यह धातु की धात्र की नजर रहती है। यह धातु की धात्र की समझने के लिये बड़े उपयोगी हैं। मुख्य अतिह्य थे, जनस्व अतिह्य हों। मुख्य अतिह्य थे, जनस्व अतिह्य सम्बद्धित के समझने के लिये बड़े उपयोगी हैं। मुख्य अतिह्य थे, जनस्व अतिह्य सम्बद्धित के समझने के लिये बड़े उपयोगी हैं। समझने के का प्राच्या की हैं। यह विषय हमें नोई सो खाने वाले हमें समुख्य करने वाली की हैं। यह विषय हमें नई सीइखीं को पढ़ाने चाहिए, क्योंक यह आलान महिए को बाहिए को को की

कुलपति प्रो. स्विता मिश्रा ने कहा कि धालु और उसकी धारणा की हम कोई कभी नहीं भूल सकते, क्योंकि से हमार देविक जीवन से जुड़े हुए हैं। धातु से किसी को किसी की अतरगांव अत्याह, धालु के मुल्य करें जुड़े हुए हैं। धातु से मिश्री की अतरगांव अत्याह, धालु के मुल्य की समझता है और इसी दुईए हैं। धातु से स्वाद करी हैं। इसी की समझता है और इसी दुईए से इस संगोधी का महत्व हैं। इसकी चर्चा आने वाला समय सिद्ध करेगा। संगोधी की अतरगांव की समय सिद्ध करेगा। संगोधी की अर्था की समय सिद्ध करेगा। से स्वाद की सिद्ध की सम्बद्ध की साम सिद्ध की सम्बद्ध की सम्वद्ध की सम्बद्ध की सम्

# मेवाड़ की खनिज सम्पदा समृद्धि की पर्याय





घातु, खान और तकनीक का आधिक एवं

#### सविवि में खनिज, खदान एवं चात्विकी पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्टी शरू

(पकार)। टीव राजन्यन संपूर्व एतिक में समृद्धि का सक रा है। संसा के व्यापीये एवं धार्तियों की दृष्टि इस क्षेत्र के तक, रोब, अगुच और खर्ने प रहें और हरता को पाने भी कर्नाटक. पुनरत, पंचन, सिंघ आदि के व्ययमे मेवाइ अका को, वो रासकीय संशित में चतुओं का म्बाका कर मंत्रार को और्वानिक और समाजिक प्रगति में सुत्रधार बने।

ख विका पुरुषा को मुखादिय विश्वविद्यालय में आरम्भ हुई निमात्स, मार्जिंग एंड मेटेलजी इन गाज्य परिचा हिस्टोरिकल प्रसंपिक्टब्स" विषयक अंतर्राष्ट्रीय संबोधी में देश-विदेश से आए विद्वानों ने प्रकट किए। संगोधी के प्रायोजक

आग्रुसर्पर्पर्स, वंडर सीमेन्ट एवं हिन्दुस्तान जिंक है।

मुख्य अतिथि ले. जनरल अनिल बज़ ने बहा कि धातु की उपलब्धि और समृद्धि देशों की उन्नति को

परिपाणित करती है. कोहिन्स एक उदाहरण है। खाने हमें समृद्ध बनाने याती रही है। यह विषय हमें नई पीडियों को पडाने चाहिए, क्योंकि यह आत्मनिर्भरता के सुन्दर उपाय है। अध्यवता कर ली सनिवि की कुलपति प्रो. सुनिता मिश्रा ने कहा कि धात और उसकी धारणा को हम कोई कभी नहीं भूल सकते, क्योंकि वे हमारे दैनिक जीवन से जुड़े हुए है। धातु से किसी को अलगाव अवज

को समझता है और इसी दृष्टि से इस संगोछी का महत्व है। उदाटन सत्र में पदाशी से अंलकृत प्रसिद्ध धालिक इतिहासकार प्रो.

नहीं लगता है। मेवाड, धातु के मूल्य

केवल धन ही नहीं, मानबीय संस्कृति के उन्नति के बोधक भी है। धातु हमारे अलंकरण, मृति, द्वार आदि के लिए उपयोगी रहे और भारत में हर युग में धातु का महत्व रहा। इतिहास, हमारे व्यापार और संबंधों को भी यदि परिभाषित करता है, तो उसके मूल के धातु और धन ही है। मेवाड़ की धरती इसका पर्याय है।

प्रारम्भ में संगोधी समन्वयक इतिहास विभाग के सहायक आचार्य,, र्खे. पीयूप भादविया ने खनिज, धातु और धातु शोधक तकनीक विषय पर संगोघ्री की उपयोगिता बताई। विशिष्ट वका श्रीलंका की प्रो. चुलानी रामवकवेला ने कहा कि राजस्थान की शास्त्र श्रीनिवासन ने कहा कि धातु खनिज सम्पदा पर संसार भर की

नजर रहती है। यह धात की घरती है। लंका, कर्नाटक आदि के अभिलेखीय प्रमाण धातु और संबंधों को समझने के लिये बड़े उपयोगी हैं। इतिहासकार डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू ने मेबाड़ को धात्विक खनिज सम्पदा की भूमि बताया और दरी, दरीबा, जावर, आगुर्चा, भृक्षिया आदि में प्राचीन काल से ही हो रही खनन गतिविधियां को इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण बताया। उनका कहना था कि धात्रिक समृद्धि के कारण ही मेवाड़ खड़ें हजार वर्षों तक आक्रमणकारियों के लिए रण बना रहा।

संगोष्टी की उपयोगिता को विभागाध्यक्ष प्रो. प्रतिभा ने प्रतिपादित की और देश-विदेश से आने वाले शोधाधियों, अध्येताओं का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन दीपांशी धाकड एवं सुचिता हिरण ने किया। संगोधी के उद्घाटन के अवसर पर डॉ. पीयुष भादविया द्वारा संपादित "एनिमल्स इन साउथ एशियन हिस्ट्री' और ''भारतीय इतिहास में पर्-पशी" तथा संगोठी की स्मारिका विमोचन भी अतिथियों द्वारा किया गया। इस संगोधी में अमेनिया की दी नायरा मर्काचयन, नेपाल की प्रो. पुनम आर.एल. राणा, श्रीलंका से वॉ. सोनाली दसनायके, डॉ. दसनायके, र्खे. उपेक्षा गमांग, प्रो. चुलानी रामबुकवेला, नलिन जयसिंह सहित भारत के 14 राज्यों से प्रतिनिधि शामिल हो रहे है।

# मेवाड़ की खनिज सम्पदा समृद्धि की पर्याय

ग्रत्, खान और तकनीक का आर्थिक एवं वैज्ञानिक महत्व, सुविवि में खनिज, खदान एवं धात्विकी पर अंतर्राष्ट्रीय संगोधी शुरू

भार संपूर्व एक्टिस में सर्वद मा सुध्य का है। संस्त के अवसीतें का मार्जुबर्द की बीत इस क्षेत्र के जागा डर्जन, अगुन्त अर्थर कार्ने पर पर्छ और हरत को बाले के कर्ताम, गुजात, tion, fits safe is went were अगरत करें, जे राजनीत संस्कृत हैं चतुन्हें का अगवार कर संसार को shiften als median prin it सम्बद्धाः बारे।

ना क्रिया पुरसा को सुवादिय fundamen it amor of stien fractions relitherscope flower abstracts करेंग्रे में देश-विदेश के अपन विकास मे प्रसार विका असिती के प्राणीतक वाई क्षेत्रकार का, कारानानार पान बंधा बीमेज को बिजुबका किया है।



मुख्य अतिथ से. जनात अनित बापूर ने बार कि जातु को उपलब्धि और समृद्धि देशों को उल्लीत को परिचालित करती है. इत्यानिकारण, महींका हुई मोलबी इन बॉडिक्ट एक उद्यानमा है। साने इने समुद्र मनाने वाली नहीं है। कर विकार हमें नह पीटमें को पटने चरित्र, क्लीब सर भागमात कर को सुचिति को कुलाईए हो. सुरिता विका ने सका कि स्वतु और दशकी पालमा को इस बोर्च कर्मा तहीं मूल सकते.

क्वोंकि में इनारे देनिक जीवन से जुड़े हुए है। बातु से फिली को आलवाब अच्छा नहीं सारण है। मेबाइ, धातू के मूल्य को सामक्राम है और इसी श्रीष्ट से इस समीक्षे का

तबाटन सत्र में पदानों से आंतकत आस्पितिक्षेत्रा के सुन्तर उपाय है। प्रसिद्ध धारियक प्रीकारककार प्रे. सारच बीरियारन ने बता कि बातु केवल बन हो नहीं, मानवीप संस्कृति के उपनी के बोधक भी है। बातु हमारे धार्तकरम, मुर्ति,



में इर पुत्र में वातु का प्रकार रहा। इतिहास, हमारे व्यामार और संबंधों भी भी भीड़ चरिपाणित करता है, तो उसके मूल के पात् और घर वी है। वेबाइ की घरती इसका पर्याप है। प्रसान में चंगोड़ी समन्त्रपत्र डीतिशस विभाग के सहागक आन्दार्ग, डॉ. पेतृत भारतिया ने शासित, पातृ और पातृ शोधक तकतीक विषय पर संगोती को उपयोगिता बताई रोपितट बना बीर्लका की

इस आदि के लिए उपयोगी से और भारत थी. चूलानी रामधुकावेला ने कका कि एकस्थान को शानिज ग्रम्थन पर संसार पर को नगर छतो है। यह धातु की घलो है। लंका, कर्नाटक आदि के आंधलेखांच प्रमाण चातु और संबंधी को समझने के लिये बते उपयोगी हैं। श्रीशासकार डॉ. ब्रॉक्स्स तृतन् ने नेवाड़ को पारिकक खरित समादा की भूमि बताया और ती, दरीबा, जावर, आगुर्धा, पृथ्विया आदि में प्राचीन काल से वी हो खो करन पतिविधियां को इतिहास

को तष्टि से महत्वपूर्ण बताया। उनका कहना या कि पाल्कित समृद्धि के कारण हो मेवाड़ वाई हजार वर्षों एक आक्रमणकारियों के लिए एवं बना रहा। संगोधी की उपनोगिता को विभागाध्यक्ष प्रो. प्रतिषा ने प्रतिपादित की और देश-विदेश से अने वाले शोधाधियाँ, अध्येताओं का स्थापत किया। कार्यक्रम का संचालन दीपांकी भाषाङ एवं सुविता हिरण ने किया। संगोधी के उद्घाटन के अवसर पर डॉ. पीपुप पादांचवा हारा संपादित प्राप्तिमस्स इन साउथ एशियन विस्ट्रोध और प्राथमसर्तोय अतिसास में पशु-पक्षीताय तथा संगोष्टी की समारिका विमोचन भी अतिथियो द्वारा किया गया। इस संगोक्षे वे अमेनिया की डॉ. नाबरा मर्काचयन, नेपाल की प्रो. पूनम आर.एल. राणा, ओलंका से डॉ. सोनालो दसनावके, डॉ. दसनावके, डॉ. उपेक्षा यमांग, प्रो. चुलानी रामयुक्तवेला, नांतन जनसिंह साहित भारत के 14 राज्यों में प्रतिनिधि शामिल हो रहे हैं।



13-01-2024

## सुविवि • अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के आखिरी दिन वक्ताओं ने कहा-

## धातु देशों को धनी बनाते रहे हैं तो जीवन के संस्कारों व स्वास्थ्य के लिए भी जरूरी

खनिज, खदान और उनसे जुड़ी प्रौद्योगिकी संसार की सपृद्धि के लिए आवश्यक है। धातु यदि देशों को धनी बनाते एहे हैं तो जीवन के संस्कारों और स्वास्थ्य के लिए भी आवरयक है। ये विचार सुविवि में हुई दो दिन की मिनरल्स, माइनिंग एंड पेटलर्जी इन साउथ एशिया : हिस्टोरिकल पसंपिक्टब्स विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के आखिरी दिन शुक्रवार को वबताओं ने व्यक्त किए।

से आए विद्वानों ने अनेक सत्रों में गमांग, प्री. चुलानी रामयुकवेला, अपने शोधपत्रों को पढ़ा और सिद्धः निलन जयसिंह भी शामिल रहे। किया कि धातु, धन और धरती के किया कि धातु, धन और धरती के पुख्य वक्ता प्रसिद्ध पुराबिद् प्रो. लिए अनेक लड़ाइयां हुई हैं लेकिन जीवनसिंह खरकवाल ने प्राचीन अब मानवता के संरक्षण के लिए खनिज संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि विग्रेडियर सी संदीप कुमार ने कहा कि हमें इस दौर में अनेक सावधानियां रखने जरूरत है और हमें उद्यमिता



और उद्योग ही नहीं, खनिज, खान आदि के विषय में गंभीर अध्ययन के लिए सोचना होगा। यह समय की आवश्यकता भी है। संगोप्ठी में अमेरिका से नन्दन शास्त्री, आमेंनिया की डॉ. नायरा मर्कचयन, श्रीलंका से संगोप्ती में एशिया के अनेक देशों डॉ. सोनाली दसनायके, डॉ. उपेशा

> संसाधनों की उपलब्धि को महत्वपूर्ण बतायां और कहा कि भारत में धातुओं की प्राप्ति संसारभर को चिकत करती है। नेपाल की प्रो. पूनम आरएल राणा ने कहा कि यह संगोप्ठी छात्रीं

के लिए ही नहीं, विद्वानों के लिए भी बहुत प्रेरक रही है। धातु भारत ही नहीं, नेपाल तक भी जीवन के संस्कारों से जुड़े हुए हैं। सुविवि के प्रो. पूरणमल यादव

ने कहा कि समृद्धि देने वाले धातु स्वास्थ्य के साधक भी हैं। कार्यक्रम को रिपोर्ट संगोप्टी समन्वयक डॉ. पीयूष भादविया ने प्रस्तुत की। संगोठी में 55 पत्रों का पत्रवाचन किया गया। भारत के 14 राज्यों के भारत में खनन कार्य और खनिज प्रतिनिधि और श्रीलंका, आर्मेनिया व नेपाल से प्रतिनिधियों ने भी शोध पत्रों का वाचन किया। इस अवसर पर पद्मश्री प्रो. शारदा श्रीनिवासन. डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू, डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित आदि मौजूद थे।

## दैनिक नवज्योति

Udaipur City - 13 Jan 2024 - Page 4

का पोर

## खनिज, खदान संसार की समृद्धि के लिए आवश्यक

सुविवि में खनिज, खदान एवं धात्विकी पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्टी का समापन

18

1ओं

नेती,

विं.

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। खनिज, खदान और उनसे जुड़ी प्रौद्योगिकी संसार की समृद्धि के लिए आवश्यक है। धातु यदि देशों को धनी बनाते रहे हैं तो जीवन के संस्कारों और स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है।भारतीय चिंतकों ने धातुओं के बहुदृष्टि उपयोग पर विचार किया है। यह विचार यहां सुखाडिया विश्वविद्यालय में शुक्रवार संपन्न मिनरत्स, माईनिंग एंड मेटेनजी इन साउथ एशियाः हिस्टोरिकल पर्मपेक्टिया विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में उभरे।इस संगोधी में एशिया के अनेक देशों से आए विद्वानी ने शोधपत्रों का वाचन किया। विशिष्ट अतिथि बिग्नेडियर (रि.) सी. संदीप कुमार ने कहा कि हमें उद्यमिता और उद्योग ही नहीं, खनिज, खान आदि के विषय में गंभीर अध्ययन के लिए सोचना होगा। मुख्य वक्ता प्रसिद्ध पुराविद प्रो. जीवनसिंह खरकवाल ने प्राचीन भारत में खनन कार्य और खनिज संसाधनों की उपलब्धि को महत्वपूर्ण बताया। नेपाल की प्रो. पूनम आर. एल. राणा ने कहा कि यह संगोधी छात्रों के लिए ही नहीं, विद्वानों के लिए भी बहुत प्रेरक रही है। अध्यक्षता सुविवि के संकाय अध्यक्ष प्रो. पूरणमल यादव ने की। संगोष्टी में पदाश्री प्रो. शारदा श्रीनिवासन, डॉ. श्रीकृष्ण जुगन्, डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित, डॉ. डी.पी. शर्मा, प्रो. भगतसिंह, प्रो. राजपाल, प्रो. अरूण वाचेला, प्रो. दिग्विजय भटनागर, विभागाध्यक्ष प्रतिभा, डॉ. वन्दनासिंह डॉ. समीर व्यास, डॉ. इसमुख सेठ, मोहित शंकर सिसोदिया, दिलावर्रसंह, सुरेश कुमार, कृति कटारिया, प्रवेश कुमार, उमेश आदि उपस्थित रहे। संचालन निकिता खंडेलवाल, दीपाक्षी धाकड एवं सुचिता हिरण ने किया। संगोष्टी समन्वयक डॉ. पीयुष भादविया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

चोटी एवं अन्य अपराधों में कमी आएगी

## धातुओं का चिकित्सा में प्रयोग भारत का मानवीय चिंतन



उदयपुर . खनिज, खदान और उनसे जुड़ी प्रौद्योगिकी संसार की समृद्धि के लिए आवश्यक है। धातु यदि देशों को धनी बनाते रहे है तो जीवन के संस्कारों और स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। भारतीय चिंतकों ने धातुओं के बहुद्दिय उपयोग पर विचार किया है। यह बात सुखाडिया विश्वविद्यालय में 'मिनरल्स, माइनिंग एंड मेटेलर्जी इन साउथ एशिया : हिस्टोरिकल पसंपिक्टब्स' विषयक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में उभरे।

सगोष्टी में एशिया के अनेक देशों से आए विद्वानों ने शोध पत्रों को पढ़ा और सिद्ध किया कि धातु, धन और धरती के लिए अनेक लड़ाइयां हुई है, लेकिन अब मानवता के सरक्षण के लिए

खनिज संसाधनों का उपयोग करना चाहिए। संगोष्ठी समन्वयक डॉ. पीयूष भादविया ने बताया कि कुल 55 पत्रों का पत्रवाचन हुआ। भारत के 14 राज्यों के प्रतिनिधि एवं श्रीलंका, आमेनिया एवं नेपाल से प्रतिनिधियों ने शोध पत्रों का वाचन किया। विशिष्ट अतिथि बिग्रेडीयर (रि.) सी. संदीप कुमार ने कहा कि हमें इस दौर में अनेक सावधानियां रखने की जरूरत है। उद्यमिता और उद्योग ही नहीं खनिज, खान आदि के विषय में गंभीर अध्ययन के लिए सोचना होगा। मुख्य वक्ता प्रसिद्ध पुराविद प्रो. जीवनसिंह खरकवाल ने प्राचीन भारत में खनन कार्य और खनिज संसाधनों की उपलब्धि को महत्वपूर्ण बताया।



भ्रमण • दुर्ग और जावर माइंस क्षेत्र का भ्रमण कर इतिहास, पुरातत्व पर करेंगे शोध

# 14 देशों के प्रोफेसर शोध भ्रमण पर चित्तौड आ

विश्वविद्यालय में मिनरल, वे भी शामिल हुए थे। इस वार माइनिंग मेटल और मेट्रोलॉजी सदस्यों का चित्तौडगढ़ भ्रमण का ऑफ साउथ एशिया पर निर्णय सराहनीय है। इससे यह अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्टी में शामिल भिन्त, शन्ति, त्याग व बलिदान यहां पहुंचे। इनमें अधिकांश विश्वपटल पर आएगी। भारत का प्रोफेसर है। सबसे पहले विधायक यह सबसे बड़ा किला प्राचीन चित्तौडगढ़ इतिहास की बातें साझा के शासकों व वीरांगनाओं ने

भारकर संवादवाता विश्तौड़गढ़ एनिमल्स इन द हिस्ट्री ऑफ साउथ एशिया विषय पर उदयपुर के माणिक्य लाल वर्मा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोच्डी में 14 देशों के प्रतिनिधि शनिवार को की धरती और अधिक चंद्रभासिंह आक्या से भेंटकर इतिहास की याद दिलाता है। यहां की। उनका इसके बाद दुर्ग भ्रमण स्वाधिमान से कभी समझौता नहीं कर इतिहास व संस्कृति का किया। महाराणा प्रताप, कुंभा, अध्ययन करने का प्रोग्राम है। सांगा, रानी परिवनी, पत्राधाय व संस्थान सदस्यों और विधायक मीरा की प्रसिद्धि जगजाहिर है। आक्या ने उपरना व मेवाड़ी पगड़ी क्षुत्राणियों का जौहर मन को पहनाकर परस्पर अभिनंदन झक्कोर देता है। रवि विराणी, किया। विधायक ने कहा कि कि महेंद्र सिंह, मुकेश मेघवाल आदि गत वर्ष इसी संस्थान की ने प्रतिनिधि मंडल का स्वागत

विधायक चंद्रभानसिंह आक्या से मिलकर चित्तौडगढ़ के इतिहास की ली जानकारी, मेवाडी पगडी पहनाकर स्वागत किया

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के निदेशक माणिक्य लाल वर्मा विश्वविद्यालय के सह आचार्य डॉ. पीयूष भादविया ने बताया कि सेमिनार में आमेनिया, अमेरिका, नेपाल, श्रीलंका व भारत सहित 14 देशों व दक्षिण भारत के प्रतिनिधि शामिल है। जो चित्तौड दुर्ग और जावर माइंस क्षेत्र का भ्रमण कर प्राचीन संस्कृति, इतिहास, पुरातत्व संस्कृति आदि पर शोध करेंगे। श्रीलंका

सं नेतान जवासंग, आमानया सं डॉ. लुइजा राहिक्स व डॉ. नायरा, काठमांडू नेपाल से डॉ. पूनम राणा, संट्रल यूनिवर्सिटी जम्मू की डॉ. अमिता गुजा, इलाहाबाद यूनिवर्सिटी की दिलशाद फातिमा, डॉ. डौपो शर्मा व डॉ. माधुरी रामां वाराणसी, डॉ. रविंद्र कुमार इलाहाबाद, प्रो. वोगेंबर सिंह व सुमन रानी उत्तराखंड आदि प्रमुख संभागी

कियागत वर्ष की अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशित दो पुस्तकें भारतीय इन साउथ एशियन हिस्ट्री की प्रति संगोष्टी पश्चात संस्थान द्वारा इतिहास में पशु-पक्षी व एनमिल्स विधायक आक्या को भेंट की गईं।

when an com

Jepanment in mistury
Jepanment in mistury
Mohan Lal Sukhadia University

Traditional Wall Hanging (Birds)

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

**Co-Coordinators:** 

Date: 13.2.2024 – 16.2.2024

No. of Participants-15

Collaboration:

Objectives of the Programme:

- To teach participants traditional techniques for creating wall hangings featuring bird motifs.
- To enhance skills in textile art and craft.
- To foster appreciation for traditional craft and design methods.

#### Outcomes:

- The students were able to try their creativity in making traditional wall hanging.
- They learned the technique and art of creating wall hangings.

#### Overview of the programme:

The "Traditional Wall Hanging (Birds)" programme, coordinated by Dr. Dolly Mogra from February 13 to February 16, 2024, engaged 15 participants in crafting traditional wall hangings. The workshop focused on techniques for designing and creating wall hangings with bird motifs, emphasizing traditional methods and craftsmanship. Participants received step-by-step instruction, including guidance on materials, patterns, and execution. The event concluded with an exhibition of the participants' work, showcasing their creativity and newly acquired skills. The programme successfully blended traditional art with practical learning, allowing participants to create unique decorative pieces and gain deeper insight into textile arts.

Programme Title: Costume Design for Design Show

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators:

Date: 01-01-2024-15.02.2024

No. of Participants-40

Objectives of the Programme:

- To teach and enhance skills in costume design for fashion shows.
- To provide practical experience in creating costumes that align with design show themes.
- To prepare participants for showcasing their designs in a professional setting.

#### **Outcomes:**

- The participants gained an understanding of the costume design industry.
- The programme helped students to consider this field as a career option.

#### Overview of the programme:

The "Costume Design for Design Show" programme, coordinated by Dr. Dolly Mogra and running from January 1 to February 15, 2024, focused on equipping participants with skills in costume creation tailored for fashion shows. The programme included workshops on design principles, fabric selection, and construction techniques. Participants engaged in hands-on practice, working on costumes that would be featured in an upcoming design show. The course culminated in a showcase where students presented their costumes, demonstrating their technical skills and creativity. The event provided valuable exposure and practical experience, helping participants refine their design abilities in a real-world context.

Programme Title: Male Tailoring

Coordinator: Dr. Dolly Mogra

Co-Coordinators:

Date: 27.02.2024- 14.03.2024

No. of Participants- 25

Collaboration:

Objectives of the Programme:

• To teach basic and advanced male tailoring skills.

• To equip participants with practical skills in garment construction and fitting.

• To provide hands-on experience in tailoring techniques and pattern making.

Outcomes:

• The participants usually engaged in female garments gained a great opportunity to

understand male garment construction.

• The participants understood the drafting and construction of male garments.

Overview of the programme:

The Male Tailoring programme, held from February 27 to March 14, 2024, and coordinated by

Dr. Dolly Mogra with the help of co-coordinators, successfully engaged 25 participants. The

course covered a range of tailoring techniques, including fabric selection, pattern drafting, and

garment assembly. Participants received practical training through demonstrations and hands-on

practice, culminating in the creation of tailored garments. The programme also included

individual feedback sessions to enhance tailoring skills. Overall, the event provided valuable

technical skills and practical experience in male tailoring, contributing to the participants'

professional development in the field.



Dr. Suresh Salvi IC-Head

E-Mail: dr.sureshsalvi@gmail.com

Mobile No. 9214560756

Date: 19-06-2023

## हल्दीघाटी युद्ध की ४४७वीं जयन्ती

राजस्थानी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर एवं राजस्थानी रा हेताळू मुंबई के संयुक्त तत्वावधान में 18 जून 2023 रविवार को हल्दीघाटी युद्ध की 447वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में रविवार को व्याख्यान, कवि सम्मेलन के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन बप्पा रावल सभागार में हुआ। विभागाध्यक्ष डाॅ. सुरेश सालवी ने स्वागत उद्बोधन दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. आई.वी. त्रिवेदी, कुलपति मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर विशिष्ट अतिथि प्रो. सी.आर. सुथार अधिष्ठाता, कला महाविद्यालय, श्री भेराराम चौधरी किमश्नर आयकर विभाग, उदयपुर, मुख्य अतिथि डाॅ. देव कोठारी पूर्व अध्यक्ष, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर ने मंच साझा किया।

कार्यक्रम की शुरूआत में प्रो. आई.वी. त्रिवेदी ने राजस्थानी भाषा और इसकी महत्ता को उजागर करते हुए आज के समय में इसे बोलचाल की भाषा बनाने की बात बताई। जिससे मान्यता की राह आसान हो सके। विशिष्ट अतिथि प्रो.सी.आर. सुथार ने राजस्थानी भाषा की मान्यता और हल्दीघाटी युद्ध एवं महाराणा प्रताप की वीरता के बारे में बताया। श्री भेराराम चौधरी आयकर आयुक्त उदयपुर ने राजस्थानी भाषा से जुड़े प्रसंग को सुनाते हुए राजस्थानी भाषा में हो रहे लेखन के बारे में बात बताई। मुख्य अतिथि डॉ. देव कोठारी ने हल्दीघाटी युद्ध के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए महाराणा प्रताप की इस युद्ध में विजय के बारे में बताया। प्रथम सत्र के बाद दूसरा सत्र में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें राजस्थान के ख्यातनाम कवि डॉ. आईदान सिंह भाटी, जोधपुर श्रेणीदान चारण, उदयपुर, सोंहनलाल चौधरी, चित्तोंड्गढ़, हिम्मतसिंह उज्जवल, भारौड़ी और नरेन्द्रसिंह रावल राजसमन्द कवियां ने हल्दीघाटी युद्ध, महाराणा प्रताप एवं चेतक घोड़े, पर काव्य पाठ किए।

इसके पश्चात् कार्यक्रम में राजेन्द्र राजपुरोहित, मुंबई की राजस्थानी भाषा पर आयकर पर आधारित "आवकलाग अर लागदेणार" का विमोचन किया गया। कार्यक्रम के अंत में सांस्कृतिक आयोजन किया गया जिसमें विभागी आमेटा, किरण लौहार, लूना और लवीना प्रजापत ने राजस्थानी गीतों पर नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. लोकेश राठौड़ ने किया। कार्यक्रम के अंत में राजेन्द्र राजपुरोहित ने महाराणा प्रताप की वीरता, त्याग एवं देशभिवत पर विचार व्यक्त करते हुए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

डॉ. सुरेश सालवी

牙刊分 Su和歌地系alvi HEAD HEAD Department of Rajasthani Mohanlal Sukhadia University, Udaipur



Dr. Suresh Salvi IC-Head

E-Mail: dr.sureshsalvi@gmail.com

Mobile No. 9214560756

### बावजी चतुरसिंह जी व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

राजस्थानी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर की ओर से 9 फरवरी 2024 को लोक संत किव चतुर सिंह जी बावजी की 144वीं जयन्ती के अवसर पर चतुरधाम नउवा चन्देसरा में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विभाग अध्यक्ष डॉ. सुरेश सालवी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि बावजी चतुरसिंह ने जन मानस को सन्देश दिया कि मन को वश में रखकर जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। आध्यात्म से मन को तपाकर ही ईश्वर को पाया जा सकता है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. देव कोठारी ने बावजी चतुरसिंह जी की नीति और भिक्त को उदाहरण सिहत उजागर किया और कहा कि बावजी मायड़ भाषा में ही बच्चे को पढ़ाने के पक्षधर रहे हैं। राजस्थानी भाषा को मान्यता न मिलना दुर्भाग्य की बात है। इससे यहां के पढ़ने वाले शोधार्थियों, विधार्थियों को आगे आने वाली परेशानियों की बात की। सह अधिष्ठाता एवं विशिष्ठ अतिथि प्रो. दिग्विजय भटनागर ने बावजी की पुस्तकों के बारे में बताते हुए उनके द्वारा स्थापित मानवीय मूल्यों की जानकारी दी। विशिष्ठ अतिथि डॉ. विकास चौधरी लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने बावजी के व्यक्तित्व को बताते हुए कहा कि बावजी ने राजसी सुख वैभव को छोड़कर सामान्य जन जीवन का मार्ग अपनाया।

इस संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए मानविकी संकायाध्यक्ष प्रो. मदन सिंह राठौड़ ने कहा कि बावजी चतुर सिंह जी ने अपने पदों के माध्यम से जनमानस को आध्यात्म का पाठ पढ़ाया। डॉ. आशीष सिसोदिया ने बावजी पर अपनी बात रखी। इस अवसर पर डॉ. सुरेश देव, डॉ. रिंग सिंह, डॉ. साबिहा, डॉ. दीपिका माली ने भी विचार रखे। डॉ. गजेन्द्र सिंह राव, डॉ. महीपाल गरासिया, डॉ वन्दना चौधरी शोधार्थी, भूपेन्द्र सिंह राठौड़, संगीता मेहरा, रावलराम पंवार, जगदीश गुर्जर, मुबीना बी, सैयद बंटी ने शोध पत्रों का वाचन किया। इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों ने डॉ. महीपाल गरासिया की पुस्तक ''राजस्थान की वागड़ अंचलीय आदिवासी लोक संस्कृति'' का मंचासीन अतिथियों ने विमोचन किया।

Dr. Suresh Salvi

HEAD
Department of Rajasthani
Mohanlal Sukhadia University, Udaipur



Dr. Suresh Salvi IC-Head

E-Mail: dr.sureshsalvi@gmail.com

Mobile No. 9214560756

Date: 19-06-2023

### हल्दीघाटी युद्ध की ४४७वीं जयन्ती

राजस्थानी विभाग, मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर एवं राजस्थानी रा हेताळू मुंबई के संयुक्त तत्वावधान में 18 जून 2023 रविवार को हल्दीधाटी युद्ध की 447वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में रविवार को व्याख्यान, कवि सम्मेलन के साथ सारकृतिक कार्यक्रम का आयोजन बप्पा रावल सभागार में हुआ। विभागाध्यक्ष डॉ. सुरेश सालवी ने स्वागत उद्बोधन दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. आई वी. त्रिवेदी, कुलपित मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर विशिष्ट अतिथि प्रो. सी.आर. सुथार अधिष्ठाता, कला महाविद्यालय, श्री भेराराम चौधरी किमश्नर आयकर विभाग, उदयपुर, मुख्य अतिथि डॉ. देव कोठारी पूर्व अध्यक्ष, राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर ने मंच साझा किया।

कार्यक्रम की शुरूआत में प्रो. आई.वी. त्रिवेदी ने राजस्थानी भाषा और इसकी महत्ता को उजागर करते हुए आज के समय में इसे बोलचाल की भाषा बनाने की बात बताई। जिससे मान्यता की राह आसान हो सके। विशिष्ट अतिथि प्रो.सी.आर. सुथार ने राजस्थानी भाषा की मान्यता और हल्दीघाटी युद्ध एवं महाराणा प्रताप की वीरता के बारे में बताया। श्री भेराराम चौधरी आयकर आयुक्त उदयपुर ने राजस्थानी भाषा से जुड़े प्रसंग को सुनाते हुए राजस्थानी भाषा में हो रहे लेखन के बारे में बात बताई। मुख्य अतिथि डॉ. देव कोठारी ने हल्दीघाटी युद्ध के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए महाराणा प्रताप की इस युद्ध में विजय के बारे में बताया। प्रथम सन्न के बाद दूसरा सन्न में किब सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें राजस्थान के ख्यातनाम किय डॉ. आईदान सिंह भाटी, जोधपुर श्रेणीदान चारण, उदयपुर, सोहनलाल चौधरी, चित्तौड़गढ़, हिम्मतसिंह उज्जवल, भारौड़ी और नरेन्द्रसिंह रावल राजसमन्द कवियां ने हल्दीघाटी युद्ध, महाराणा प्रताप एवं चेतक घोड़े, पर काव्य पाठ किए।

इसके पश्चात् कार्यक्रम में राजेन्द्र राजपुरोहित, मुंबई की राजस्थानी भाषा पर आयकर पर आधारित "आवकलाग अर लागदेणार" का विमोचन किया गया। कार्यक्रम के अंत में सांस्कृतिक आयोजन किया गया जिसमें विभांगी आमेटा, किरण लौहार, लूना और लवीना प्रजापत ने राजस्थानी गीतों पर नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. लोकेश राठौड ने किया। कार्यक्रम के अंत में राजेन्द्र राजपुरोहित ने महाराणा प्रताप की वीरता, त्याग एवं देशभिक्त पर विचार व्यक्त करते हुए सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

डॉ. सुरेश सालवी

प्रभार्ती. Suarethe Salvi

HEAD
Department of Rajasthani
Mohanlal Sukhadia University, Udaipur



Dr. Suresh Salvi IC-Head

E-Mail: dr.sureshsalvi@gmail.com

Mobile No. 9214560756

# बावजी चतुरसिंह जी व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

राजस्थानी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर की ओर से 9 फरवरी 2024 को लोक संत किव चतुर सिंह जी बावजी की 144वीं जयन्ती के अवसर पर चतुरधाम नउवा चन्देसरा में एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विभाग अध्यक्ष डॉ. सुरेश सालवी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि बावजी चतुरसिंह ने जन मानस को सन्देश दिया कि मन को वश में रखकर जीवन को सार्थक बनाया जा सकता है। आध्यात्म से मन को तपाकर ही ईश्वर को पाया जा सकता है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. देव कोठारी ने बावजी चतुरसिंह जी की नीति और भिक्त को उदाहरण सिहत उजागर किया और कहा कि बावजी मायड़ भाषा में ही बच्चे को पढ़ाने के पक्षधर रहे हैं। राजस्थानी भाषा को मान्यता न मिलना दुर्भाग्य की बात है। इससे यहां के पढ़ने वाले शोधार्थियों, विधार्थियों को आगे आने वाली परेशानियों की बात की। सह अधिष्ठाता एवं विशिष्ठ अतिथि प्रो. दिग्विजय भटनागर ने बावजी की पुस्तकों के बारे में बताते हुए उनके द्वारा स्थापित मानवीय मूल्यों की जानकारी दी। विशिष्ठ अतिथि डॉ. विकास चौधरी लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने बावजी के व्यक्तित्व को बताते हुए कहा कि बावजी ने राजसी सुख वैभव को छोड़कर सामान्य जन जीवन का मार्ग अपनाया।

इस संगोध्ठी की अध्यक्षता करते हुए मानविकी संकायाध्यक्ष प्रो. मदन सिंह राठौड़ ने कहा कि बावजी चतुर सिंह जी ने अपने पदों के माध्यम से जनमानस को आध्यात्म का पाठ पढ़ाया। डॉ. आशीष सिसोदिया ने बावजी पर अपनी बात रखी। इस अवसर पर डॉ. सुरेश देव, डॉ. रिश्म सिंह, डॉ. साबिहा, डॉ. दीपिका माली ने भी विचार रखे। डॉ. गजेन्द्र सिंह राव, डॉ. महीपाल गरासिया, डॉ वन्दना चौधरी शोधार्थी, भूपेन्द्र सिंह राठौड़, संगीता मेहरा, रावलराम पंवार, जगदीश गुर्जर, मुबीना बी, सैयद बंटी ने शोध पत्रों का वाचन किया। इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों ने डॉ. महीपाल गरासिया की पुस्तक "राजस्थान की वागड़ अंचलीय आदिवासी लोक संस्कृति" का मंचासीन अतिथियों ने विमोचन किया।

July

Dr. Suresh Salvi
IC
HEAD
Department of Rajasthani
Mohanlal Sukhadia University, Udaipur

## Two Weeks Training Programme-V *On "Skill Development in Social Sciences"*

'Research Skill Development in Social Sciences, Communication & Management'
Organized by Dept. of Sociology under RUSA 2.0 project
(18.11.2024 to 01.12.2024)

S.No.	Date	Time & Session	Topic	<b>Resource Person</b>
1.	18.11.2024	10-12	INAUGURAL SESSION Chair Person- Prof. Sunita Mishra Chief Guest- Prof. D.S. Chundawat Keynote Speaker- Prof. Mohan Advani Resource person- Prof. G. Soral Topic – Scientific and Doctoral Research Guest of Honor- Prof. K.B.Joshi	Prof. G. Soral
2.	Monday	1-3	Welcome Adders- Dr. Raju Singh Communication :A Comprehensive Overview	Dr. G.S. Chauhan
3.	19.11.2024	10-12	Bhartiy Gyan Parampara me Shiksha Vyavastha	Dr. Gattu Lal Patidar
4.		1-3		Prof. Seema Jhalan
5.	Tuesday 20.11.2024	10-12	Hypothesis-Types and Sources Research Process	Dr. Deepa Soni
6.	Wednesday	1-3	Research Process: A Trans Disciplinary Exercise	Prof. Rajeev Gupta
7.	21.11.2024	10-12	Open Educational Resources for teaching and research	Dr. Shriram Pandey
		1-3		Prof. P.C.Jain
8. 9.	Thursday 22.11.2024	10-12	Qualitative and Quantitative research Methods.  New Education Policy and skill Development in the Context	Prof. Ashutosh Vyas
40	<b>7</b>	1.0	of Higher education scenario	D D G :
10.	Friday	1-3	Statistical tools in research and skill development	Dr. Deepa Soni
11.	23.11.2024	10-12	Sustainable development Goals and present scenario	Prof. S.L. Sharma
12.	Saturday	1-3	Few issues related to sociological studies and research	Dr. Satish Kumar Sharma
13.	24.11.2024	10-12	Statistical tools in research	Dr. Deepa Soni
14.	Sunday	1-3	Evolution of Higher Education in India and Research Agencies	Dr. G.S. Chauhan
15.	25.11.2024	10-12	Wining personality- Vijayee Vyaktitva	Prof. Ramesh Arora
16.	Monday	1-3	Statistical analysis in social sciences	Dr. Deepa Soni
17.	26.11.2024	10-12	Empowering Research with Artificial intelligence: Practical Applications	Dr. Kiran Soni
18.	Tuesday	1-3	Diagrammatic presentation of Data in Social Sciences	Dr. Deepa Soni
19.	27.11.2024	10-12	Gender sensitization	Dr. Sumitra Sharma
20.	Wednesday	1-3	Field survey and strategy	Dr. Deepa Soni
21.	28.11.2024	10-12	Pracheen subhashit parampara main shodh sutra	Dr. Murlidhar Paliwal
22.	Thursday	1-3	Write a research Paper and publication	Pro. Karunesh Saxsena
23.	29.11.2024	10-12	From modernity to post- modernity: Is it a paradigmic shift in social sciences?	Prof. Rajeev Gupta
24.	Friday	1-3	Measurement scale and research design	Pro. Karunesh Saxsena
25.	30.11.2024	10-12	Emile Durkheim's concept Suicide and Present Perspective	Prof. P.C.Jain
26.	Saturday	1-3	Urban Studies	Prof. Rajeev Gupta
27.	01.12.2024	10-12	Time and Stress Management	Pro. Karunesh Saxsena
28.	Sunday	1-2.30	Valedictory Session- Chair Person- Prof. Sunita Mishra Chief Guest- Prof. D.S.Chundawat Keynote Speaker- Prof.Mohan Advani Resource person- Topic- New dimensions of research skill development in Social Sciences. Guest of Honor-Prof. Kanika Sharma. Lot of Thanks Dr.Sangeeta Athwal	Dr. Deepa Soni

### Report

## One day Regional Workshop

on

### New Labour Codes in India: Gender Concerns of Women Workers

The workshop was organised jointly by Centre for Women's Development Studies, New Delhi in collaboration with UGC Centre for Women's Studies, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur on June 24, 2024 at Conference Hall, Golden Jubilee Guest House, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur from 9:30 am to 4:30 pm.

Workshop deliberated upon New Labour Codes in India, gender concerns and implications of these codes on women workers. The inaugural session began with Deep Prajjwalan and the kulgeet of the University. At the inauguration, Dr. Garima Mishra, regional coordinator and Assistant Professor at the UGC Centre for Women's Studies, welcomed everyone and the opening remarks was given by professor N. Manimekalai, organiser of the workshop and Director of the Centre for Women's Development Studies, New Delhi. Porf. Manimekalai raised the concerns related to new labour codes whether MSME is being clustered, which leads to women's discrimination, and what is the actual status of how women's participation in labour is falling and how self-help employers are not covered under these codes. Professor Sunita Mishra, Hon'ble Vice Chancellor of MLSU, and Professor Sudha Chaudhary, Director, UGC Centre for Women's Studies at MLSU Udaipur could not attend the workshop and sent their best wishes to the organisers.

#### Session I

### Panelists -

**Prof. Ritu Dewan**, President of 64th Indian Society of Labour Economics *Institutionalizing Inequalities via Labour Codes* 

**Ms. Indrani Mazumdar,** former faculty member of the Of the Centre for Women's Development Studies, Delhi *New Labour Codes and Wage Gaps* 

Moderator - Mr. Sudhir Katiyar, Centre for Labour and Action

Prof. Ritu Dewan, contextualized labour codes and rights and started with inequality issues in the context of women workers and their participation. India's ranking in the gender gap index demonstrates increased gender gap and lower economic participation of women in labour force and onus is on the government machinery and system which promotes privatization and monetization, pro-industrial policies, and centralization of the regime. New development projects like development in Dharavi lead to displacement of labours and rehabilitation of locals ultimately pushes them to worst condition. Rapid shrinking of the formal sector is leading to expanse of informal sectors in India and the informal sector has the highest part of the labours coming out as contractual based employment. Domestic workers are totally unrecognized, with a total of 4.8

million, of which 3 million are women and 28% are minors. The states of Rajasthan, UP, and Uttarakhand have the highest rate of child labour. The year 2017–18 may be considered a year of the lowest dip, where labours faced the most difficulties especially women. The reasons behind this was demonetization, policies on taxes (higher and unreasonable tax like 18% on books and no tax on churi or sindoor) followed by pandemic lockdown in the country.

Prof. Dewan mentioned that currently, two thirds of the women workers are unpaid and there's no social security benefits, no paid leave given to them, and this number has been rising to 50% in some of the sectors. men (60%) and women (56%) both workers are engaged in contractual jobs as there is no job available in the market. Going beyond binary of men and women, whole system do not recognize transgender or third gender as labour in the labour force market. She also shared that Rajasthan has the biggest number of trans people in comparison to any other state. whereas no dedicated efforts is being witnessed in this regard. If we see the labour codes with their passing and enactment date-wise, then it is understandable that there was no consultation with the organizations, the genuine advisory board, committee, or concerned sectors while passing these laws. She also focused on language used in New Labour Code that is not gender inclusive and gender neutral.

Ms. Indrani Mazumdar discussed labour laws emergence from power struggle and how master servant laws were evolved with the time. Role of revolutionary struggle demonstrated that there is a dual function that if the power is giving you some concessions then it will have some rights which are taking away the labours rights and also restricting power of labours to fight or retaliate over running the movement. She chronicled about the revolutionary acts of Bidi workers. Prof. Mazumdar analysed that labour laws are an instrument for both organised and unorganised workers. She explained that division of informal and formal sector has lost its relevance. She also highlighted the non-inclusiveness of home based workers in these laws and codes. There's no minimum wages to bidi workers, home based workers and domestic workers.

Prof. Mazumdar was concerned about objectionable and non-inclusive language of these codes. She chronologically explained political legal history of labour laws and genesis of labour acts during the emergency and part of political agenda, procedure of these laws. She emphasized on issues related to the absence of equal remuneration, issue of maternity relief to women employee being area of debate since 1950s. It is correctly assumed that the wage has to cover the family unit because without this survival is difficult. Even male members are being paid lower and how the village economy, family economy, rural economy is getting affected and how it is leading to the low weight economy need to be considered. This is a difficult for women to be in industrial economy or industrial workplaces which are totally male dominated domain. Women have their struggles to get in jobs in industrial workplace because women specially are preferred on the basis of gender norms. Preference of women is growing with the modernisation within brackets of gender bases work and socialization.

Women are in minority in the garment work force in the northern part of India but in some places of South India women are in majority. Government schemes focusing on skills development train girls or young women and provide them services which are just the period of 6 months to 3 years and these all are young unmarried girls so once they are get married, perspective of social security to a permanent job remain a question. Also there are no social health securities and for entitlements to benefits of provident fund one has to serve for 10 years in the service. Due to short span of work of young girl or women in work keep them out as a beneficiary of such provisions.

Strikes play a role of significant tool for labours to show resistance and to fight for and get their rights; now in the pro-industrial system and the power discourse in the matter of caste & religion, system is not delivering the jobs and also not providing legal power to strike. She concluded her discussion with the issue of the pendency of complaints filed and redtapism in the system.

The moderator, Mr. Sudhir Katiyar submitted that 85 to 90% of labour is from informal sectors and unorganized and new labour codes are very limited. There is a crucial need for the informal sectors to be included in these codes and to be recognized, and the biggest challenge is: how is that development and implementation possible? He also referred that Udaipur, Kotra, Indore extension is the south golden border and 80% rate of participations of the labours are unrecorded.

### **Session II**

### The panellists

Dr. Sophy KJ, Associate Professor, National Law University, Delhi

Domestic Workers and New Labor Reforms: A Battle Lost in the Reproductive Rights Framework.

Ms. Khushboo Choubisa, Senior Law Officer, CEO, Udaipur

Occupational Safety at Workplace: Special Reference to Sexual Harassment

Moderator – **Sister Kirti**, state coordinator, Rastriya Gharelu Mahala Shramik Sansthan.

Dr. Sophy KJ started her discussion with Jurisprudence of labour or trade law and how it is rooted in common law or private law as contract law. She notified that labour law has its origins in the UK and discussed the chronology and how the demands of workers created the legal existence of labour laws. She elaborated on vocalizing the demands of labour. She also argues about the legislative idea of the labour union so that they can contribute and make laws effective. She expressed her concerns about provisions not being covered by these codes. She specifically mentioned the provisions of the Indian Penal Codes, namely, criminal trespass, obstruction of property, attempt to obstruction of property to labours not being included in these laws. She also summarised the five phases of labour laws. The relevance of industrialization in reference to rationalization. She classified the artificial division between industrial laws and contract-based employment as she stressed on the fact that workers need to be defined. She also explains the role of small factories in reference to industrialization. She presented the fact that 83% of the workers are Dalit and from the unorganized sectors. She highlighted the role and division of caste, religion,

and gender and indicated that the labour laws should be labour and worker-oriented. India has richer legal literature on domestic workers but still domestic workers, and specifically women workers, are abandoned from the law provisions. She concluded with political ignorance and legislative lethargy towards it.

Ms. Choubisa emphasized on gap at the level of execution at the ground level, lack of awareness, gender discrimination, violation of fundamental rights of women workers at workplace. She referred to the Vishakha guidelines and POSH act and highlighted the physical abuse and sexual harassment at the workplace with women. She stated that the incidents of sexual harassment and sexual abuse are constant because employers are not aware of the provisions of the acts. The SLO also informed about provisions of the ICC & LCC in detail. In this discussion, Ms. Indrani submitted that sexual harassment has been kept separated and isolated from labour laws and women workers are being deprived of their rights and the exploitation in the context of wages is continued with zero liability of compensation or answerability on the employers. This a way of social isolation of complainants. The session concluded with the submission that the women workers don't know their rights and are hence exploited, and no reports or complaints are being made against such abuses.

The moderator was sister Kirti works for rights of domestic women workers, their right to wage and social security. She said that implementation of minimum wage and inclusion of domestic workers in formal domain will help women find employment. And because of these domestic women workers, many of the contributing people are able to live their lives efficiently and do their jobs easily.

### **Session III**

#### **Penalists**

Ms. Shruti Nair and Ms. Dimpal Sharma, Aajeevika Bureau

Mr. Sarfaraz Sheikh, Program Director, Kotra Adivaai Sansthan

Miss Nair discussed migrant women workers and informal workers from the tribal belt of district Banswada, South Rajasthan. When the male worker of the family migrates for employment, the women are left out at their place, and they have no individual identity other than the relationship with the man, so they do not have any employment opportunity. She also reported that in Banswada district, the whole family migrates because the area is dry and arid and agriculture is not possible there, so the whole family migrates and the migration of women also increases.

She stressed on the law being made but not implemented well and the inefficient redressal system. She collected the data and reported that the casual worker ratio is 9/10, the figure for self-employed workers is 3/5 and 30 crore people in India are earning less than the minimum wage. Her report shows concerns about in case of injury to workers, employers are not being responsible but the worker herself/ himself due of her/his fault and their inattention. Lack of legal support system and hiring an advocate for which they cannot afford the fees mostly deprive them from their jobs. In Rajasthan, cases registered between 2021 and 2024 is 8855 and the figures for women were

9.6%. Only 268 out of the total 8855 were filed, but directly by women, only 3%. In 9 States data, 21538 total cases were registered between May 2021 and June 2024 out of which 41616 men and 3479 were women.

She noticed that women and girls are less skilled and more vulnerable and they are either coolies or helpers, and construction or factory work. The higher numbers of workers are from the informal sector, who do part-time work and get low wages. She also marked political exclusion at both ends, source and destination, falling labour force and the participation of women, disproportionate impact on Dalit and tribal women. In the tribal areas, women living in open areas are deprived of sanitation and safety.

It is emphasized that unpaid work isn't counted, and wages are reduced on the basis of the female's low ability, meaning that she cannot do much hard work or physical work or has less physical capacity to work. She further signified that even supervisors are being paid low wages. In the workplace of a woman worker should be a washroom, restroom, and meeting room, and for that, there should be collective bargaining. She concluded her argument with the issue of unfair labour practices.

Mr. Sheikh reported on the region of Kotda, the tribal area of Rajasthan, which has 95.8% tribal population. He informed that 2.5 to 3 lakh labours are migrant labours, go only from one village to another for agricultural purposes, and the immigrant rate is 49.2% in the area. These workers or migrants go towards Gujarat or Banaskantha. The report included a Bhil tribe, culturally known as BHAGIYA, in this system the whole family move for agriculture purposes and employment purposes and this family works for the peasants in the area. In some parts, they are not paid wages but production of the crops. But in commercial crops, the cash is also paid; the fifth to sixth part is paid to them. When the whole family moves, women don't get any wages, but she still works as an unpaid worker. He concluded his discussion with concern for these tribes.

Ms. Mazumdar is of the opinion that it's not a progressive step that women's unemployment rates are increasing, but this is an absolute unemployment issue. The session was moved forward by an open discussion where everyone contributed their opinion. Some of the research scholars had their opinions and questions, and some of them had some suggestions. Despite having some subjective opinions, all the participants, and the speakers collectively seemed unsatisfied with these labour codes and of the opinion that there is much to do with these acts for the empowerment of labour, especially women. Each participant was given a feedback form to fill out, which was collected by the coordinators at the end of the workshop. Workshop was concluded with an anticipation for more advanced discussion on the topic in near future. At the end of the workshop, Dr. Garima Mishra gave a vote of thanks from the Center for Women Development Studies, Delhi and the Center for Women Studies, MLSU.

This workshop engaged academicians, research scholars working in this area, civil societies who are working in different areas like domestic workers, women in informal sector, street vendors, garment sector, Adivasi women workers and Mazdoor Sangthan from the region. As an outcome, collaborative efforts towards inclusion of gender concerns in labour codes and implementation of these labour laws in right spirit was demanded. Civil societies will constantly write to the government highlighting missing agenda and gaps in these codes which are mere compilation of all the 29 laws with a complicated note. New research ideas were churned out for research scholars willing to engage in this field. Deliberation between academicians and civil society and initiative by Women's Studies Centres in this discussion was appreciated by representatives of civil societies.







on

## New Innovation and Emerging Technologies for Libraries: Enriching Education in Alignment with National Education Policy

**January 30-31, 2024** 

**Organized By** 

## **Department of Library and Information Science**

and

Sponsored by NRC-Indian Council of Social Science Research (ICSSR), New Delhi

## Venue

Department of Library and Information Science Mohanlal Sukhadia University Udaipur, Rajasthan – 313001

राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन एवं आईसीएसएसआर नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग द्वारा दो दिवसीय नेशनल सेमिनार का आयोजन हुआ। इस सेमिनार के उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नेशनल लाइब्रेरी ऑफ़ इंडिया के डायरेक्टर जनरल प्रोफेसर ए.पी. सिंह व बाबासाहब भीमराव अंबेडकर सेंट्रल यूनिवर्सिटी लखनऊ के प्रोफेसर एम.पी. सिंह रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संघठक कला महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रोफेसर सी. आर. सुथार ने की। इस कार्यक्रम में कला महाविद्यालय के सहअधिष्ठाता प्रोफेसर दिग्वजय भटनागर, प्रोफेसर एस. के. कटारिया ने अपनी उपस्थिति प्रदान की। दो





दिवसीय इस नेशनल सेमिनार में देशभर से आये हुए पुस्तकालय विज्ञान के कुल 180 प्रोफेशनल्स एवं शोधार्थी- विद्यार्थीयों ने भाग लिया एवं प्रथम दिवस के तकनीकी सेशन में डॉ क्षेमा प्रकाश, डॉ सीमा परिहार सहित कुल 12 प्रतिभागियों द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

द्वितीय दिवस के अंत तक इस राष्ट्रीय सेमिनार में कुल 40 शोध पत्रों का वाचन किया गया । सेमिनार की रूपरेखा के अनुरूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और आधुनिक तकनीकी को पुस्तकालय में उपयोग व राष्ट्र के विकास में पुस्तकालय के योगदान के बारे में चर्चा की गई। जिसमे कृत्रिम बुधुमता का पुस्तकालय में उपयोग, इमर्जिंग टेक्नोलॉजी के उपयोग व विकास, आधुनिक व तकनीकी शिक्षा आदि विषय मुख्य धारा में रहे।

इस कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. पी. एस. राजपूत रहे और पुस्तकालय एवं सुचना विज्ञान विभाग से डॉ राजाराम भाट, नवीन छापरवाल, जितेंन्द्र सुहालका, अनुज यादव, जितेन्द्र मेघवाल, श्रवण श्रीमाली, महेंद्र इत्यादि ने कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया।

## पुस्तके और पुस्तकालय भारतीय संस्कृति की अमूल धरोहर : प्रो.सिंह

## किसी भी देश की उन्नति और अवनति वहां के सूचना तंत्र पर निर्भर करती है : प्रो. अजय प्रताप सिंह

### दो दिवसीय नेशनल सेमिनार का शुभारंभ

उद्यपुर (कास.)। राजा राममहत्त्राय लाइयेरी फाउंडरान एवं आईमीएसएसआर नई दिखें कर्ममुक्त तलाधान में महत्त्रला संपुक्त तलाधान में महत्त्रला क्याया विज्ञान क्याया विज्ञान क्याया हुए दिस्सीय नेशनल संमाना हुए दो दिस्सीय नेशनल संमाना का सुनारभ हुआ। कार्यक्रम को शुरुआत में सेमिनार के सचिव हुं पी एस राजपूत ने सभी पर्भार हुए विज्ञान कर्मे एवं प्रतिभागियों का स्वायत करते हुए बताय कि संमिनार में देश के विभिन्न राज्यों से 180 प्रतिभागि भाग ले रहे हैं जो प्रस्तकल्य में आधुनिकोकरण, अदियेसन, नई तकनीकी नई



तकनीकी और प्रौद्योगिको का पुरतकालय में प्रयोग एवं राष्ट्रीय रिक्षा नीति के संदर्भ में किये जा रहे प्रयासों के बार में मंधन करेंगे। बाबासाहब भीमराव अविडक्त सेंट्रल यूनवर्मिटी लाउनक से पर्धार

प्राप्तसर एम.पा. ामह न कहा कि पुरकालय जान के मंदिर है एवं पुरकालय संस्कृति को संजोकर रखते हैं। उन्होंने पुरकालय विज्ञान के क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकियों से अवगत करवाया। प्रोफेसर एस.के. कटरिया ने यतंमान डिजटल युग में एतंगरिज्य से संबंधित मुद्रों पर चर्चा की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नेप्रतल लाडकेरी ऑफ डिडिया के इच्येक्टर जनरल प्रोफेसर ए.पी सिंह ने आस्त्रारआरएलएफ द्वार

किए जा रहे कार्यों के बारे में चर्चा की। उन्होंने ग्राम पंचायत स्तर पर पुस्तकालय की महत्ता के बारे में समञ्जाया। साथ हो पस्तकालय विज्ञान क्षेत्र के प्रोफंशनल्स को अपने क्षेत्र में पुस्तकालय के विकास से सम्बंधित कार्य करने हेतु किया। महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रोफेसर सी.आर. सुथार् ने पुस्तकालय से संबंधित एक्ट के विषय में अपनी वात रखी। सहअधिष्ठाता प्रोफेसर दिग्वजय भटनागर ने इस दो दिवसीय संभिनार हेतु सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं प्रेपित की। तकनीकी सत्रों में डॉ क्षेमा प्रकारा, डॅं सीमा परिहार सहित कुल 12 प्रतिभागियों द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

INCHARGE HEAD

INCHARGE HEAD

Deptt. of Library & Information Science

MISU, Udaipur (Raj.)





ये मुख्यांच्या विश्वायायाय्य के दुश्यकायाय्य के दुश्यकायाय्य क्षायक विद्यान विषयम् ।

हार में दिवायां मेरावार भीवतार का मुख्याय दुश्य भीवतार का मुख्याय दुश्य भीवतार की प्राप्त स्वायाय्य के त्रियं के विषयम्य स्वायाय्य मेराविक के स्थितम्य स्वायाय्य मेराविक के स्थितम्य स्वायाय्य मेराविक के स्थितम्य स्वायाय्य मेराविक के स्थायम्य स्वायाय्य मेराविक स्वायाय्य स्वायाय्य मेराविक स्वायाय्य मेराविक स्वायाय्य मेराविक स्वायाय्य मेराविक स्वायाय्य स्वायाय स्वायाय्य स्वायाय स्वाय स्वायाय स्वायाय स्वाय स्वाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वाय स्वायाय स्वायाय स्वाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वाय स्वायाय स्वायाय स्वायाय स्वाय स्वाय स्वायाय स्वायाय स्वाय स्वा का पुस्तकालय में प्रयोग एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में किये जा रहे प्रयासी पर संघत करेंगे। इस मौके पर बाबासाहब भीपराव अंबेडकर सेंट्रल वृत्तिवसिटी लखनऊ के प्री एमणे सिंह कहा कि प्रतकालय ज्ञान के मंदिर है एवं पुस्तकालय संस्कृति को संजीकर रखते हैं। उन्होंने पुस्तकालय विज्ञान

डिजिटल युग परं चर्चा की। मुख्य आविष नेशनल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया के डायरेक्टर जनरल प्रो एपी सिंह ने आरआरआरएलएफ द्वारा किए जा रहे कार्ती के बारे में चर्चा की। उन्होंने ग्राम पंचायत स्तर पर पुस्तकालय की महता पंचानत स्तर पर पुस्तकालय का महता क्रिकार केंद्र के प्रोफेशनालय को अपने क्रेज में पुस्तकालय के विकास से सम्मचित कार्य करने के लिए प्रोल्माहित किया। कला महाविद्यालय के अध्यक्षता प्रो सीआर सुधार ने पुस्तकालय से संबंधित एक्ट के विषय में अपनी बात रखी। मह अधिष्ठाता पी दिग्वजन भटनागर ने भी विचार व्यक्त किए। डॉ. सेमा प्रकाश, डॉ.सीमा परिहार सहित कुल 12 प्रतिभागियों द्वारा शोध पत्र का वाचन



क्ले मॉडलिंग कार्यशाला का प्रारंभ





उत्यपुर

## दैनिक नवज्योति



# राष्ट्रीय सेमिनार में 40 शोध पत्रों का वाचन



उदयपुर। राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन,आईसीएसएसआर नई दिल्ली व मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के तत्वावधान में चल रहे दो दिवसीय नेशनल सेमिनार का समापन बुधवार को हुआ। कार्यक्रम के सचिव डॉ पी एस राजपूत ने बताया कि दो दिवसीय इस राष्ट्रीय सेमिनार में 40 शोध पत्रों का वाचन किया गया । सेमिनार की रूपरेखा के अनुरूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और

आधृनिक तकनीकी को पुस्तकालय में उपयोग व राष्ट्र के विकास में पुस्तकालय के योगदान के बारे में बताया। उमेश शर्मा ने प्रतिभागियों को भविष्य में पुस्तकालय विज्ञान प्रोफेशन में होने वाले बदलाव से अवगत करवाया। पुस्तकालय विज्ञान क्षेत्र से संगप्रिया तिवारी ने वर्तमान युग में विग डाटा के पुस्तकालय में अनुप्रयोगों के बारे में बताया । दीपाली जैन ने पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में इमर्जिंग टेक्नोलॉजी के उपयोग व विकास के बारे में विचार रखें।

डॉ अनिल शर्मा एवं अखिलेन्द्र सूर्यवंशी ने भी पुस्तकालय विज्ञान में भविष्य में होने वाले अपार संभावनाएं के बारे में अपने विचार रखें। अंत में विभाग के शोधार्थी नवीन छपरवाल ने पुस्तकालय विज्ञान क्षेत्र में आधुनिक व तकनीकी शिक्षा में विद्यार्थियों को उच्च ज्ञान को अर्जित करने पर जोर दिया। पुस्तकालय विज्ञान विभाग से डॉ राजाराम भाट, नवीन छापरवाल, जितेन्द्र सुहालका, अनुज यादव, श्रवण श्रीमाली, जितेन्द्र मेघवाल, महेंद्र इत्यादि मौजूद थे।

INCHARGE HEAD

INCHARGE HEAD

Science

Library & Information Science

NESU, Usaipur (Res).)

## देश की उन्नति और अवनति सूचना तंत्र पर निर्भर : प्रो. अजय प्रताप

उद्धपुर। राजा रामभोहन राय लाइब्रेरी फाउँडेशन एवं आईसीएसएसआर नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग द्वारा दो दिवसीय नेशनल सेमिनार का शुभारंभ हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत में सेमिनार के सचिव दों, यो एस राजपुत ने सभी पधारे हुए विद्वानजनों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते



हुए बताया कि संमिनार में देश के विभिन्न राज्यों से 180 प्रतिभागी भाग ले रहे हैं जो

पुस्तकालय में आधुनिकीकरण, ऑटोमेशन, नई तकनीकी नई तकनीकी और प्रौद्योगिकी का पुस्तकालय में प्रयोग एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में किये जा रहे प्रयासों के बारे में मंथन करेंगे। बाबासाहब भीमराव अंबेडकर सेंट्रल युनिवर्सिटी लखनऊ के प्रो. एम.पी. सिंह ने कहा कि पुस्तकालय ज्ञान के मंदिर है एवं पुस्तकालय संस्कृति को संजोकर रखते हैं। उन्होंने पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकियों से अवगत करवाया। प्रोफेसर एस.के. कटारिया ने वर्तमान डिजिटल युग में प्लेगरिज्य से संबंधित महों पर चर्चा की। मुख्य अतिथि नेशनल लाइब्रेरी ऑफ़ इंडिया के डायरेक्टर जनरल प्रोफेसर ए.पी. सिंह ने आरआरआरएलएफ द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में चर्चा की। उन्होंने ग्राम पंचायत स्तर पर पुस्तकालय की महत्ता के बारे में समझाया। साथ ही पुस्तकालय विज्ञान क्षेत्र के प्रोफेशनल्स को अपने क्षेत्र में पुस्तकालय के विकास से सम्बंधित कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया। कला महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. सी.आर. सुथार ने पुस्तकालय से संबंधित एक्ट के विषय में अपनी बात रखी। सह अधिष्ठाता प्रो. दिग्विजय भटनागर ने दो दिवसीय सेमिनार हेतु सभी प्रतिभागियों को शुभकामनाएं प्रेषित की। तकनीकी सत्रों में डॉ क्षेमा प्रकाश, डॉ सीमा परिहार सहित कुल 12 प्रतिभागियों द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किए गए।

## आधुनिक पुस्तकालय से विकसित भारत की संकल्पना पर दिया जोर

उदयपुर राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन एवं आईसीएसएसआर नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय नेशनल सेमिनार का आयोजन किया गया।

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रम में सचिव डॉ. पीएस राजपूत ने बताया कि सेमिनार में 40 शोध पत्रों का वाचन किया गया। पुस्तकालय विज्ञान क्षेत्र से संगप्रिया तिवारी ने वर्तमान में बिग डाटा के पुस्तकालय में अनुप्रयोगों के बारे में बताया। दीपाली जैन ने पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में इमर्जिंग टेक्नोलॉजी के उपयोग व विकास के बारे में अपने विचार रखे।

इस मौके पर डॉ. अनिल शर्मा, अखिलेंद्र सूर्यवंशी, नवीन छपरवाल, डॉ. राजाराम भाट, जितेंद्र सुहालका, अनुज यादव, श्रवण श्रीमाली, जितेंद्र मेघवाल आदि मौजूद रहे।

## पुस्तकालय में आधुनिकीकरण, ऑटोमेशन, नई तकनीकी पर दी जानकारी

उदयपुर@पत्रिका, राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन एवं आईसीएसएसआर नई दिल्ली के तत्वावधान में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग की ओर से दो दिवसीय नेशनल सेमिनार का शुभारंभ हुआ। सेमिनार के सचिव डॉ. पी एस राजपुत ने बताया कि



शुभारंभ हुआ। सेमिनार के सचिव इसमें विभिन्न राज्यों से 180 पुस्तकालय में आधुनिकीकरण, हाँ. पी एस राजपृत ने बताया कि प्रतिभागी भाग ले रहे हैं, जो ऑटोमेशन, नई तकनीकी और

प्रौद्योगिको का पुस्तकालय में प्रयोग के संदर्भ में किये जा रहे प्रयासों के बारे में भंधन करेंगे। मुख्य अतिधि नेशनल लाइबेरी ऑफ इंडिया के डायरेक्टर जनरल प्रोफेसर ए.पी. सिंह थे। कला महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रोफेसर सी.आर. सुधार, सहअधिष्ठाता प्रोफेसर दिग्विजय भटनागर आदि ने विचार रखे।

INCHARGE HEAD
INCHARGE HEAD
Science
Depth. of Library & Information Science
(Rej.)



## आधुनिक पुस्तकालय से कराया अवगत

उदयपुर. राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन एवं आइसीएसएसआर नई दिल्ली के तत्वावधान में सुविवि के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग द्वारा दो दिवसीय नेशनल सेमिनार का समापन हुआ। कार्यक्रम सचिव डॉ पीएस राजपूत ने बताया कि सेमिनार में 40 शोध पत्रों का वाचन किया। सेमिनार की रूपरेखा के अनुरूप राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और आधुनिक तकनीकी को पुस्तकालय में उपयोग व राष्ट्र के विकास में पुस्तकालय के योगदान के बारे में बताया। उमेश शर्मा ने प्रतिभागियों को भविष्य में पुस्तकालय विज्ञान प्रोफेशन में होने वाले बदलाव से अवगत करवाया। पुस्तकालय विज्ञान क्षेत्र से संघप्रिया तिवारी ने वर्तमान युग में बिग डाटा के पुस्तकालय में अनुप्रयोगों के बारे में बताया। कार्यक्रम में दीपाली जैन, डॉ अनिल शर्मा, अखिलेन्द्र सूर्यवंशी, डॉ राजाराम भाट, नवीन छापरवाल, जितेन्द्र सुहालका, अनुज यादव आदि ने विचार रखे।

01/02/2024 | Udaipur City | Page: 7 Source: https://epaper.patrika.com/